ब्रम्हाण्ड

बाबा के साथ एक बार यात्रा के दौरान ये Subject निकला, तो बाबा बोले- "ये जो ब्रम्माण्ड आप देख रहे हैं ये सिर्फ Miniature है इसका विराट ऊपर है। जिस प्रकार कोई इंसान बड़ी Building या Office बनाता है तो बाहर उसके Model में उसका Miniature बना के रखता है। उसी प्रकार ये पृथ्वी उस विराट का Miniature है। पृथ्वी पर जो कुछ भी दिखाई देता है, वो सब ऊपर से ही आया है। आज का इंसान इसी Miniature में हो कर रह गया है, वो क्या विराट को समझेगा और क्या पायेगा। ३३ करोड़ भावनाओं से इस पृथ्वी की रचना हुई और वो सारे के सारे भाव इंसान के अंदर होते हैं। यहाँ इस पृथ्वी पर आप जो भी देखते हैं वो बहुत ही छोटे रूप में है। यदि आप इसी को नहीं समझ पाए तो फिर जीवन व्यर्थ है। इस Miniature में सबको भेजा ही इसलिए था कि अपनी यहाँ की यात्रा के दौरान जीवन के सदुपयोग से विराट तक पहुँच ने की राह प्राप्त करें" और खुलासा करते हुए बाबा ने बताया कि "यदि आप ऊपर जाके बोलें कि, मैं लोनावला गुरुस्थान से आया हूँ, तो पूछा जाएगा कहाँ का लोनावला, आप कहेंगे महाराष्ट्र। तो कहाँ का महाराष्ट्र- कौन सा महाराष्ट्र ? आप कहेंगे भारत। कौन सा भारत? क्योंकि ऊपर से पूरी पृथ्वी एक बूँद के सामान दिखती है, अब उस बूँद में पृथ्वी, पृथ्वी में भारत, भारत में महाराष्ट्र और महाराष्ट्र में लोनावला।

ये ही है पृथ्वी की पहचान। यहाँ पर आज के युग का इंसान उस पृथ्वी के भी, जो क़तरे के बराबर है, वो भ्रम में जीवन जीता है। मैं करता हूँ, मैंने किया। जहाँ पर आपकी पृथ्वी एक कतरा है, वहां पर आप जो स्वयं पृथ्वी का एक कतरा हैं, क्या हैसियत रखते हैं। ध्यान देने वाली बात ये है कि मालिक के मूड में आया और रचना हो गयी। हम सब विराट के पास ही रहते थे, तो मालिक ने सबको Miniature में आनंद लेने के लिए भेजा। आनंद लेकर, पहुँचना विराट के पास ही है। पर इस युग का इंसान खुली आँख की बेहोशी में घूम रहा है। वो इस Miniature में आकर के भी miniature को अपना वास्तविक संसार समझके बैठा है।

आज का इंसान महा भ्रम में है आप सब miniature वाले हैं और यदि आप विराट का मान करेंगे तो आप को इस Miniature में भी सम्मान मिलेगा और विराट की राह भी मिल जायेगी। क्योंकि मान से मानता, मानता से मानव। इन Simple words यदि आप एक छोटे से कुएँ में नहीं तैर सकते हैं तो समुंद्र में तैरने का आनंद क्या आप ख़ाक लेंगे। तो मालिक ने भेजा था आनंद लेने के लिए पर सब यहाँ फस गए। वो मालिक दया का सागर स्वयं शरीर लेकर आ गए , ताकि आप को इस Miniature से बहार निकाल सकें। ये बात यूं हुई कि आपको १० पैसे नहीं आते ख़र्चने के लिए और रूपये 500 का नोट चाहिए। १० पैसे ख़र्च करने नहीं आते, खर्चना सीख़ लो रुपए 500 का नोट भी मिल जाएगा। वैसे भी प्रकृति की लिखाई और बोली दोनों बहुत सरल हैं। यदि आज के युग का इंसान प्रकृति को प्रेम से पढ़े और सुने तो विराट की यात्रा सरल हो जाएगी।

इस पृथ्वी पर देखो कितनी Population है और किसी भी एक का रंग रूप आकार एक दूसरे से नहीं मिलता। आप भी अपने जीवन में कोई Product बनाते हैं तो raw Material लगता है। मालिक इस product के लिए क्या-क्या raw Material लगाता होगा। उस product को तैयार करने के लिए मालिक की Factory और raw material व size की इंसान कलपना भी नहीं कर सकता। इसीलिए मालिक ने पृथ्वी पर आकर मानव बनाने की factory डालली। जिसका Head Office हिमगिरी गुडगाँव सेक्टर-7 में है। इसलिए बेस्ट यही है कि गुरूजी का ध्यान किया जाय और जीवन को सेवा में Invest कर दिया जाए।

बाबा ने कहा।

पञ्च तत्व

हाथ में पाँच उंगलियाँ क्यों दी हैं ? इस पर बाबा की मेहर एक दिन चल रही थी तो बाबा ने बताया कि पूरी सृष्टि का निर्माण पाँच तत्वों से हुआ- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश। स्वाभाविक जब रचना ही इन पाँच तत्वों से हुई है तो किसी भी कर्म को करने के लिए ये पाँचों तत्व ही लगेंगे इसीलिए इंसान के हाथ में पाँच उंगलियाँ होती हैं क्योंकि वह सारे काम इन्हीं हाथों से करता है। पाँचों तत्वों का सदुपयोग जब इंसान करता है तो ये Positive Sense में इसको सहयोग देते हैं और अगर दुरुपयोग किया जाये तो ये ही पांच शक्तियाँ , पांच विकार बन जाते हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। पाँच तत्वों के बारे में बताते हुए बाबा ने बोला कि धरती यानि माँ-आधार हैं, जल-जीवन है, वायु-प्राण शक्ति है, अग्नि- कर्म की प्रेरणा और आकाश पिता है।

जैसे आपकी माताजी Earth हैं और मैं Sky हूँ। मैं ऊपर से देखता हूँ माताजी को अपना सहयोग देना चाहिए। ये पाँचों शक्तियाँ, पाँचों तत्व स्वयंभू हैं पर फिर भी चार तत्वों को इष्ट लगता है आकाश का इष्ट नहीं है। आगे अपने वचनों में बाबा ने पाँचों के सदुपयोग के बारे में बताने की दया करी, पृथ्वी के लिए बाबा ने बताया कि सब इसी से उपजे हैं इसीलिए पृथ्वी आधार है, अपने आधार का मान उससे जो जैसा है वैसा ही बढ़िया है, की प्रेरणा लेना और खेती करना उत्तम है। जल के बारे में बाबा ने बताया कि जल से जीवन है, जल को मान देने से आप के अंदर के विकार निकल जाते हैं, इसीलिए गुरूजी के यहाँ चरणामृत मिलता है। वायु यानि आपकी प्राण शक्ति अर्थात साँसें, इसके बारे में पहले ही बता चुका हूँ कि ये मालिक की दी हुई नियामत है , इसके सदुपयोग से ही जीवन है। तो हर एक को मालिक की दी हुई अमानत ये हर पल ध्यान में रख कर सदुपयोग करना चाहिए न कि अपना माल समझ कर

उसकी ऐसी-तैसी फेरनी चाहिए। जैसे कि संसार में बोलते हैं न कि जिसके पास चार पैसे क्या आये तो बहुत हवा में आ गया। तो जीवन में गुरु ध्यान से Natural रहना चाहिए हमारा माल नहीं है सब गुरु का है तो काहे का अहंकार।

इंसान के पेट की अग्नि उससे संसार में सारे कर्म करवाती है जैसे फकीर के दिल की बेचैनी की आग उसको मालिक तक पहुंचाती है। दो रोटी जीवन के लिए ज़रूरी है न कि पूरा जीवन दो रोटी कामाने के लिए मिला है। जीवन को जितनी जीविका लगाती है पर पूरा जीवन कमाने के लिए न ख़र्च दो। जब इंसान इस भावना से कर्म करता है तो उसके कर्म के फल में कुदरत बरकत भर देती है, वैसे भी Excess is/of everything is bad तो जब अग्नि भयानक रूप ले लेती है तो सब स्वाहा कर देती है, ये है अग्नि तत्व। अंत में बाबा आकाश तत्त्व के लिए बोले तो मालिक ने कहा कि आकाश सबका सहारा है, आसरा है, उम्मीद है, भरोसा है। इंसान जब भी किसी दुःख या तकलीफ़ में होता है तो प्रार्थना करते हुए वो आकाश की तरफ़ ही देखता है। गुरु वालों को जीवन में पृथ्वी पर समान भाव से रहते हुए अभिलाषाएं, सोच आकाश की तरह ऊँची रखनी चाहिए। इसीलिए कहते हैं Simple Living & High Thinking . इसका Simple, Sweet and Short इस तरह है कि इंसान को अपने पाँव पृथ्वी पर जमा कर प्रेम से गुज़र-बसर करनी चाहिए। जल को जीवन में मान देना चाहिए। हर स्वांस के लिए मालिक को शुक्र अदा करना चाहिए न कि भ्रम पालना चाहिए। सृष्टि और उसके रहस्यों को जानने की जिज्ञासा की लगन, आग होनी चाहिए और सदा मालिक में भरोसा रखना चाहिए।

मेरे सर्वे-सर्वाः बाबा ने कहा...

मोक्ष

एक बार बाबा, गुरु चरणों में आने से पहले के समय की बात बता रहे थे तो बोले कि एक ने मेरे से पूछा - आप रब को मानते हैं या रब से डरते हैं ? तो मैंने उन सज्जन को कहा कि ये दो ही Option हैं तो उसने बोला हाँजी तो मैंने बोला मेरी Option तीसरी है। मैं रब से प्रेम करता हूँ। इस पर जो बाबा ने आगे दया की, वो वास्तव में सुनने, समझने, अपनाने के लायक है। बाबा ने बताया कि पृथ्वी पर प्यारे, हर एक परिस्थिति के दो option रहते हैं। पर वास्तव में हर situation के तीन option होते हैं पर तीसरा गुप्त रहता है क्योंकि गुरु गुप्त है। इसलिए जवानी में मुझे 2 option समझ नहीं आई थी मैंने तीसरी option ली, "मैं कुदरत से प्रेम करता हूँ" . पृथ्वी के इंसान के पास हर situation की 2 option रहती हैं। पहली दिल की, दूसरी दिमाग की। इन्ही दोनों के मंथन से, जोड़-तोड़ से इंसान हर परिस्थिति में निर्यण लेता रहता है पर गुरु वाले जिनकी मालिक की दया से आत्मा जागृत होती है वो तीसरी option पर चलते हैं अर्थात वो आत्मा की सुनते हैं।

But it is very easy to say and very Difficult to be गुरु सेवा करते रहने से ही आत्मा की जागृति होती है जो फ़कीर लोग होते हैं वो आत्मा की सुनकर चलते हैं इसलिए फ़कीरों के बारे में कहा जाता है कि वो अपनी लहर में रहता है, अपनी धुनकी में रहता है। इंसान को प्राप्त दो option में से हर परिस्थिति में better को चुनना होता है और मैं आपको Best ऑप्शन बता रहा हूँ। जैसे किसी भी कर्म को करने के लिए इंसान सोचता है ये तो सरल ही है, या ये कैसे होगा। फ़कीर हर परिस्थिति में बोलता है कि देखें अब मालिक क्या करवाएगा। अपने घर संसार में भी या तो आप अपने संतान के पिता होते हैं या यार/दोस्त की तरह रहते हैं आत्मा की जागृति वाला उस मालिक की दी हुई संतान का care taker बन के रहता है। बाबा ने कहा कि - एक बार प्यारे एक श्रद्धालु ने मुझसे पूछा कि गुरूजी मोक्ष क्या होता है तो मैंने उससे पूछा कि आप मोक्ष के बारे में क्या जानते हो तो उसने बोला कि आने जाने से छुट्टी, जन्म-मरण, मुक्ति - मैंने फिर पूछा कि ये ठीक है इसके आलावा और कुछ ? तो उसने बोला कि जी गुरूजी गुरु के हो जाएँ तो बाबा ने कहा - मैंने उसको बोला कि आपकी दोनों बातें सही हैं और मोक्ष की यही परिभाषा है फिर आप मेरे से क्या जानना चाहते हो तो रब का प्यारा बोला जी गुरूजी ये तो परिभाषाएं हैं जो मैंने पढ़ी या सुनी हैं। पर वास्तव में मोक्ष क्या है, ये मैं आपसे जानना चाहता हूँ क्योंकि आप सब जानते हैं। बाबा बोले उसकी बात सच में सच्ची थी तो मैंने उसको बताया कि प्यारे मैं गुरु चरणों की धूल हूँ पर हाँ थोड़ी सी जानकारी तो रखता हूँ मैंने गुरु से प्रेम किया और उस प्रेम में सब कुछ पा लिया तो एक फ़कीर का मोक्ष गुरु रज़ा होती है। जैसा मालिक चाहें वही फ़कीर के लिए मोक्ष की भांति होता है आगे बाबा ने कहा फिर मैंने उसी से पूछा क्या आप गुरूजी से प्रेम करते हैं तो उस प्यारे ने जवाब दिया जी गुरूजी। इनका प्रेम ही है जो सब कुछ है हमेशा साथ ही रहने का मन करता है तो मैंने उसको बोलै प्यारे क्या आप गुरु से इतना प्रेम करते हैं कि हर पल उनके साथ रहना चाहते हैं। गुरूजी का तो जब भी Mood करता है वो सृष्टि में आ जाते हैं तो आप मोक्ष प्राप्त करके मुक्ति चाहेंगे या गुरूजी के साथ हर पल रहना है तो उनके साथ

पृथ्वी पर आते रहेंगे ये आप स्वयं ही तय करिए। तो बाबा ने बताया कि उसने झट से माथा टेक दिया और प्रार्थना की कि जी दया बनाये रखिएगा।

बाबा ने कहा।

गुरु-पूर्णिमा

पूर्ण गुरु की पूजा, आपके अपने गुरु की पूजा।

गुरु पूजा के बारे में वचन करते हुए बाबा एक दिन यह बता रहे थे- बाबा ने कहा कि पृथ्वी पर आप सब त्यौहार मनाते हैं, त्यौहार में सबसे बड़ा पर्व गुरु पूजा का पर्व है। क्योंकि गुरु सबसे श्रेष्ठ है। गुरु-पूजा, गुरु और शिष्य के मनाने वाला पर्व है। पूजा का दिन हर शिष्य के लिए वो दिन होता है जब गुरु अपने शिष्य को अपने साथ खड़ा कर लेता है और वास्तव में गुरु पूजा शिष्य का ही दिन होता है। गुरु की तरफ से शिष्य के लिए पूरी छूट रहती है, वो जो चाहे जैसा चाहे कर ले। गुरु-पूजा भक्ति यात्रा का फाइनल paper होता है, जिसके Result पर शिष्य का Promotion आधारित रहता है। सारा साल गुरु शिष्य की सेवा करता है और फिर पूजा वाले दिन वो Check करता है कि शिष्य ने एक साल संग में रह कर क्या सीखा ? क्या समझा ? बाबा ने बताया कि सबसे प्यारा सम्बन्ध गुरु शिष्य का ही होता है। पृथ्वी के सारे रिश्ते इसी सम्बन्ध से ही निकलते हैं। गुरु शिक्षक रूप में सारा साल अपने शिष्य को शिक्षा बाँटता रहता है। पूजा के दिन गुरु उसका exam लेता है और पिता रूप में शिष्य के Result को देख़ कर ख़ुश होता है।

जैसा ये शब्द खुद ही बता रहा है, गुरु पूजा तो पूर्ण गुरु ही करा रहा है। तो पूजा होती भी वही है जो गुरु करा ले और पूजा के लिए शिष्यों को हर प्रकार से स्वतंत्रता होती है। फिर बाबा ने कहा - ये तो हुआ प्यारे गुरु पूर्णिमा का पर्व, विशेष दिन पर गुरु की पूजा, पर एक सच्चे शिष्य के लिए उसकी हर एक स्वांस गुरु पूजा के समान ही होती है। पर वहां तक पहुंचना पड़ता है हर किसी के बस की बात नहीं है। एक सच्चा शिष्य अपनी हर एक स्वांस में गुरु आज्ञा में रहता है। हर एक स्वांस अपने गुरु की आज्ञा अपने सर-माथे पर ले कर चलना ही सच्ची गुरु पूजा है। इसीलिए मंत्र की तीसरी पंक्ति भी यही है- "पूजा मूलं, गुरु पदम्" पर वो आती दूसरी के बाद है- "मंत्र मूलं, गुरु वाक्यं"।

जैसे आप संसार में भी exam के दिन वही लिखते हो जो आपने सारा साल मन लगाकर पढ़ा होता है। तो exam के दिन आप सरे साल की पढ़ाई को संजो के लिखते हैं। और आपने सारे साल पढ़ाई कैसे करी वो exam का result बता ही देता है। मालिक हर काम शिष्य के कल्याण के लिए ही करता है। गुरु पूजा उसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

पूजा के दिन गुरु शिष्य को 'सम भाव' में भी ले आता है और आगे भी बढ़ा देता है। वास्तव में गुरु पूजा है ही शिष्य के कल्याण के लिए। इसी के बारे में पृथ्वी पर धारणा रहती है कि जब है सब गुरु का ही तो उसको क्या अर्पण करो, क्या दो ? तो यदि शिष्य सारा साल गुरु सेवा से जुड़ा रहता है,अच्छा करने के प्रयास से जुड़ा रहता है तो गुरु पूजा करा ही लेता है।

गुरु- गुड़ है तो, चेला शक्कर है। बाबा बोले कि एक अंदर की बात बताऊँ, मैंने झट बोला जी- दया के सागर, दया। तो बाबा ने कहा कि अंदर की बात यह है कि कौन पूजा करता है? किसकी पूजा होती है ? और कौन करवाता है ? ये ही है गुरु-शिष्य के सम्बन्ध की मधुरता।

बाबा ने कहा।

युग

एक यात्रा के दौरान सुबह-सुबह बाबा के चरणों में बैठा हुआ था तो बाबा अपने Mood में एकदम से बोले कि युग परिवर्तन सृष्टि का नियम है और गुरु युग के हिसाब से कार्य करता है फिर बाबा ने चारों युग का तत बताया-

सतयुग-तप

त्रेता - यज्ञ

द्वापर- अर्चा विग्रह

कलयुग - सिमरण

मैंने बड़े धीरे से प्रार्थना लगाई कि बाबा कलयुग में सिमरण, तो बाबा ने बताया कि सिमरण यानि पाठ, मंत्र, ध्यान। मैंने हाथ जोड़कर बोला जी। बाबा बोले कि हर एक कर्म का एक basic, एक आधार, एक तत है। कलयुग का मालिक ने सिमरण रखा है पर आप सब लोग साक्षात् गुरु के दर्शन कर चुके हैं, साक्षात् गुरु से मिल चुके हैं। तो मालिक ने उस सिमरण को Practical का रूप दे दिया यानि सेवा; ध्यान देना मूल मंत्र की पहली Line "ध्यान मूलं, गुरु मूर्ति" और दूसरी Line "मंत्र मूलं, गुरु वाक्यं"

हम सबके जीवन में गुरूजी हैं उनके ध्यान से हमें सिमरण ही करना है जो इस युग का Best है। गुरूजी ने इस सिमरण को कर्म रूप में ढाल के हम सब को दिया। गुरूजी के मुख से निकला हुआ कोई भी एक शब्द शिष्य के लिए मंत्र और सिमरण होता है। जो भी गुरु मुख से निकला है उसी को अपने जीवन में धार के शिष्य को जीवन भर सेवा करनी चाहिए क्योंकि इस युग में गुरु ने हमें कर्म-क्षेत्र में भेजा है न कि कुरु-क्षेत्र में। इसीलिए गुरूजी ने सब के लिए मंत्र और पाठ को कर्मों के संग जोड़ दिया। तो जब भी शिष्य या सेवक गुरु के ध्यान से गुरु

द्वारा दिए गए मंत्र और पाठ जो सेवा कर्म करता है उनकी गिनती सत्कर्मों में आ जाती है। अपने बच्चों के कल्याण के लिए ये गुरूजी का अनूठा तरिका है पाठ भी चलता रहे सेवा भी चलती रहे, कर्म भी होता रहे। so कुल मिला के यदि आप गुरु ध्यान में हैं तो गुरु आपकी साँसों का सदुपयोग करा ही देता है। सदुपयोग कराने के बाद मोक्ष भी करा देता है।

अच्छाई और बुराई सदा साथ-साथ चलती है, इसीलिए युग भले कोई भी हो आप को इस युग में गुरु दर्शन हुए हैं। जीवन में जो भी देखना, जो भी समझना, जो भी करना गुरु ध्यान से करना मेरे प्यारे। जीवन जीने का आनंद आ जाएगा। इसीलिए इस युग को एक बार तो मन से Thank You बोल ही देना क्योंकि आपको साक्षात् गुरु इस युग में मिला है पर जब इस युग में गुरु मिल ही गया है तो गुरु की ही मानना तो आना जाना सफ़ल हो जाएगा।

एक अच्छी बात और बताऊँ ये युग तो धन्य हो गया जिसमें साक्षात् गुरूजी ने अपने चरण रख दिए। इससे भी ज़्यादा ख़ुशी की बात तब होगी जब गुरु की मानने वाले चेले उनके बताये हुए मार्ग पर अपना जीवन-यापन करेंगे। फिर बाबा बोले आपको समझ आ गया प्यारे, मैंने तुरंत कहा जी मालिक। तो फिर मैं क्यों बोल रहा हूँ।

बाबा ने कहा।

<u>प्रार्थना</u>

किसी भी विषय के बारे में बाब बोलै करते थे - "It is very easy to say but the utility of the life is to be."

एक बार बाबा ने बताया कि धूप करना बहुत अच्छी बात है पर कितनी करोगे और कब तक करोगे। मालिक अपने शरीर की तरफ ऊपर से नीचे की तरफ इशारा करते हुए बोले कि ये मालिक की धूप-बाती है।

धूप को ऊपर से जलाते हैं नातो सर पर इशारा करते हुए बोले कि इस धूप-बाती को गुरु के प्रेम से प्रज्वलित कर दो और सेवा से ये बाती की भभूत कर दो वो है सच्ची धूप- बाती। फिर बाबा बोले कि वो जो गुरूजी की प्रार्थना है न उसमें Total सब कुछ आ जाता है। पहली बात तो प्रार्थना जब भी करो तो पूरे मन से और ध्यान से बोलो और एक दिन खुद ही प्रार्थना हो जाओ। सारे जीवन का निचोड़ प्रार्थना में आ जाता है - 'जाहि विधी राखे गुरु ताहि विधी रहिए'। गुरूजी सब कुछ Practical किया करते थे, हम सब उन्हीं की संतान हैं जीवन में

जो भी अच्छा लगे वो स्वयं हो जाता है और जिस चीज़ की ज़रुरत आपको हो उसकी खेती कर देना मालिक दया के सागर हैं हर एक को उन्होंने पर्याप्त दिया है पर फिर भी यदि किसी को कोई चीज़ समझ नहीं आती, कुछ कहना-जानना हो तो उसके लिए मालिक से प्रार्थना रख दी। आप जब भी चाहें मालिक को प्रार्थना लगा सकते हैं। प्रार्थना लगाने पर बाबा ने क्या ख़ूब कहा - 'Apply, Apply, Apply till you get the reply'.

मालिक प्रार्थना सुनते हैं पर लगाने वाले को प्रार्थना लगानी आनि चाहिए। वैसे एक बात बताऊँ जो धूप जलाने में हम सब मिलकर गुरूजी की प्रार्थना करते हैं उस प्रार्थना में सब आ जाता है। जब भी धूप-ज्योत के समय में सब इकट्ठे होते हैं धूप-ज्योत attend करते हैं तो उस प्रार्थना को मन से करो कि वो सब के अंदर उतर जाए - नमोः नमोः नमोः गुरु नमः गुरु करिए, जाही विधी राखे गुरु ताही विधी रहिए।

सेवादार के लिए इतना ही काफ़ी है और आगे चलो तो "मन हो गुरु मंत्र, गुरु सेवा हाथ में" तो उसका यह है कि जीवन में आप काम-धन्धा नौकरी व्यापार कुछ भी करो पर श्याम के समय स्थान पर थोड़ी बैठक ज़रूर देनी चाहिए। कुदरत जब भी सेवा का मौका दे तो सेवा करते हुए आप का ध्यान उसी सेवा में होना चाहिए और मन में गुरूजी का पाठ चलना चाहिए। उससे मन भी शांत रहता है और सेवा में मालिक Account भी Credit कर देता है।

फिर है "किया अभिमान तो फिर, मान नहीं पाएगा।" हर पल जो एक बात ध्यान रखने योग्य है वो है उस मालिक को इन सांसों और जीवन के लिए शुक्र अदा करना और शुक्राना इसलिए करना है कि हमारा कुछ है ही नहीं जो कुछ है गुरु का है तो कभी भी कर्ता के भाव से कोई कर्म नहीं करना चाहिए।

उसके बाद आता है "ज़िन्दगी की डोर सौंप, गुरु चरणों में" it is so simple कि जब है ही सब उस मालिक का तो फिर अपनी सोच कहे के लिए लगाएँ। सोच के स्थान पर ध्यान उस मालिक का सदा लगाना चाहिए कि जो देना जानता है वो चलाना तो जानता ही है।

"भ्रम में राखे चाहे पार उतार दे।" यानि जाहि विधी राखे गुरु, ताहि विधी रहिए।

और आखरी Para है " ज्ञान-ध्यान की आशा, इक दूजी आशा छोड़ दे" 'Knowledge for Utility और Utility is Knowledge' . यही जीवन का सदुपयोग है। तो कुल-मिलाकर जब तक सब पढ़ते हैं, तब तक ये शब्द हैं, जब समझते हैं, तो Knowledge और जब हो जाओगे प्यारे, तो प्रार्थना कहलाएगी।

बाबा ने कहा।

<u>*परिवार*</u>

एक दिन बाबा ने परिवार के लिए बताया कि परिवार का अर्थ प्रेम, सेवा! हम सब गुरु परिवार वाले हैं! एक दिन बाबा गुरुजी की मेहनत, सेवा के लिए बोल रहे थे तो उसमे शब्द निकला परिवार तो बाबा ने बताया कि गुरुजी ने भी पृथ्वी के हरेक कोने से एक एक आत्मा को उठाकर परिवार बना डाला! Naturally अलग अलग हाव-भाव, बोली से भिन्न, स्वभाव कि variety वालों को ईकट्ठा करके गुड़गाँव में परिवार बना दिया!

संसार में भी तो variety लगती है पर गुरुजी ने हम सबको ईकट्ठा करने के बाद सबको प्रेम, शिक्षा एक समान ही दी (उनके प्रेम का तो यह आलम था कि हर एक शिष्य को यह ही लगता था कि गुरुजी सबसे ज्यादा प्रेम उसी को करते हैं, वो ही गुरुजी का सबसे लाडला है) और गुरुजी ने अपना परिवार बनाया! उस परिवार को बनाने में, परिवार वालों को सँवारने में गुरुजी ने जो मेहनत करी, यह इसीलिए थी कि हम उनके बताए मार्ग पर, उनके प्रेम आर सेवा कि जोत को सदा आगे बड़ाते रहें! सब परिवार वालों का उत्तरदायिताव ही यह है कि सब प्रेम से मिलकर चलें, न कि अपने-अपने personal को लेकर चलें!

हमे शिक्षित करने के लिए और सवारने के लिए गुरुजी दिन-रात लगे रहते थे! उनका दर सदा सबके लिए खुला रहता था! "वो" अकेले ही सबके लिए सब कुछ कर गए! हम सब उसी मालिक की संतान हैं तो सब को मिलकर एक दूसरे की सलाह के साथ, परिवार रूप में सेवा करनी चाहिए! अच्छा करना अच्छी बात है, सलाह करके करना और उससे भी अच्छी बात है! Personal कार्य स्वयं करने पड़ते हैं और universal के लिए कुदरत हमेशा साथ होती है!

मुझे मेरे गुरु से जो भी शिक्षा मिली उसका परिणाम है यह "गुरुधाम"! आप सब लोगों को भी मेरी यह ही सलाह है की सब कुछ बाँ गया है बस अब आप सब मिलकर मालिक की जोत से जोत जलाना और जिसको जो नहीं समझ आए आपस में एक दूसरे से सलाह-मशवरा कर लेना, पर करना वही जो universally accepted हो! वैसे भी जब, कोई सेवक अपने गुरु से प्राप्त हुई, शिक्षा और गुरु आज्ञा का पालन करता है, चलता है। तो उसके कर्मों में 'गुरु' दिखाई देता है। दूसरे लोग देख कर अवश्य आपस में बात करते है, कि देखो इसकी शिक्षा कितनी अच्छी और अलग लग रही है, इसने कहाँ से प्राप्त की? सामने वाले के मन में जिज्ञासा आती है।

गुरु परिवार सर्वश्रेष्ठ परिवार है उसके हर एक सदस्य को अपना उत्तरदायित्व समझ कर गुरुजी द्वारा दी गई शिक्षा के अनुसार सेवा करनी चाहिए,

तो कुल ब्रम्हाण्ड में गुरु गूँजेगा।

बाबा ने कहा...

मर्यादा

बाबा अक्सर कहा करते थे कि संसार और जीवन दोनों में decency और मर्यादा अति आवश्यक है। संसार में यदि आप decent लोगो से मिलते और अपने स्वाभाव से decent रहते है तो आपका संग भी अच्छो के साथ होता है और आपको जीवन का ज्ञान भी प्राप्त होता है, जैसे बालक बड़ा होने के बाद माता के सामने नंगा नहीं आता और रात सोते हुए आप अपने कमरे का दरवाजा बंद करके सोते है , ये मर्यादा में आता है। सोसाइटी में मर्यादा बहुत जरुरी है। इसी प्रकार जीवन में , सेवा में, भविष्य में मर्यादा ही आपको आगे लेकर चलती है। आगे बाबा ने बताया कि decency का सिंपल सा अर्थ सरल स्वाभाव। इस पृथ्वी पर हमें अपना जीवन हर प्रयास करके सरता से जीना चाहिए। प्रकृति ने जो भी हमे दिया है उसका शुक्र अदा करके सदुपयोग मे लगाना चाहिए न कि और की मांग करते रहना चाहिए। वैसे भी बच्चे की थाली में रोटी ख़त्म होते ही वो अगली डाल ही देती है। जो प्रकृति क्या - क्या कर सकती है , हर हाल में मालिक के ध्यान में खुश रहना चाहिए और भरोसा रखना चाहिए कि जिस मालिक ने जीवन दिया है और जीवन से जुड़ी हर जरूरत भी पूरी कर देगा। इसीलिए कहते है , "तेरा भाणा मिठा लागे".

जो परिथतिया आती है वो सरल और नेचुरल बनाने की लिया ही आती है। पर मालिक के ध्यान में होंगे तभी उन परिस्थियों का लाभ उठा पायेंगे, नहीं तो इंसान हर situation से घबराकर कंफ्यूज और frustrate _

होता है। गया समय जो लौट कर आता नहीं, Tackle Every Situation Cheerfully & Carefully. .\ उस समय के साथ जुड़ी परिस्थितियाँ जो कुछ सीखाने बनाने आई थी , व्यर्थ चली जाती है। संसार में मर्यादा का अर्थ है, अपने - अपने गुणों में जीना , जो जिस भी रिश्ते में है उस रिश्ते में अपना रोल , अपने गुणों से निभाए। जैसे घर गृहस्थी में पति-पत्नी को अपने - अपने गुणों चलना चाहिए तो घर स्वर्ग बन जाता है। पर होता ये है कि हम तो गुण में जीते नहीं , दूसरों को free की सलाह देते है। आध्यात्म में कुछ अलग नहीं करना है, जो भी जीवन में करते है, वही अध्यात्म में करना है। बस फर्क, intension का है। संसार में आप personal होते हो अध्यात्म में आप universal होते हो। जिसमे भी साँसे मालिक की दया से आप आँख , नाक , कान सब सुराख़ खोलकर गुरु के सामने बैठना चाहिए क्योंकि गुरु हर पल आपको सरल बनाने में लगा रहता है और बनाकर ही छोड़ता है। आप भले अपने जीवन में Indecent हो, र गुरु के आगे उसी Indecency को लेकर, decency से बैठ तो सकते हो। गुरु दया का सागर है, वह आपके विकार लेकर, आकार दे ही देता है, clear , सेवादार को और शिष्य को गुरु के आगे हमेशा अपनी मर्यादा में रहना चाहिए। क्योंकि जब मर्यादा होगी , प्राप्ति तभी होती है , Clear . अच्छी बात और बताऊ - गुरु के सामने दो ही शब्द बोलने चाहिए , " जी - हां जी" . ये ही दो शब्द बने है गुरु के आगे बोलने के लिये। यही को शब्द से आप अपना

पूरा जीवन निर्वाह कर सकते है। में सबको हाँ ही करता हूँ न, आपकी माता जी को भी हर चीज के लिये हाँ जी ही बोलता हूँ , किसी और शब्द की जरुतत ही नहीं पड़ी , इतना जीवन गुजर गया।

हम सबको बनाने वाली प्रकृति सवयं मर्यादा में रहती है, मालिक सवयं मर्यादा में रहते है - क्योंकि गुरु गुणों की खान होता है , गुरु ही शरीर लेकर आये और प्रकृति के नियमो के अनुसार उन्होंने अपने जीवन के कर्म और सेवा की। गुरु जी हर चीज़ को सदा practically किया करते थे। साक्षात मालिक होते हुए भी वो सदा अपने गुणों में रहे , शरीर की मर्यादा में रहे। जब हम सबका बाप, मालिक मर्यादा में रहे तो हमें तो पूछने की आवश्यक्ता ही नहीं है कि हमें जीवन में क्या करना है, It is so simple . पिता पर पूत , जान पर घोड़ा , पूरा नहीं तो थोड़ा - थोड़ा।

मालिक के दिए इस जीवन में अपनी मर्यादा में रहोगे और नम्रता में रहोगे तो इस जीवन का सदुपयोग भी हो जाएगा और जीवन जीने का आनंद भी आएगा।

एक छोटी सी बात में भी आप सबके साथ share करना चाहूंगा, अपने गुरु जी जब भी गुडगाँव स्थान पर आते थे तो अपनी पादुका, वहीं पर उतारते थे जहाँ "सारी संगत की होती थी, With Due Respect, बाकी शिष्यों को मैंने चप्पल पहनकर अंदर Corridor में जाते देखा, उतारते कहाँ थे? उसका Idea नहीं।

प्रसाद के लिये गुरूजी हमेशा basement में संगत के साथ बैठ कर खाते थे, जबकि बाकी शिष्यौँ को मैंने बड़ी माता जी के kitchen के आगे, आँगन में प्रसाद करते देखा"।

"जब से देखा है जलवा तुम्हारा, कोई आँखों को जचता नहीं है ,

लाख देखे यहाँ हुस्न वाले, कोई आलम में तुमसा नहीं है"!

बाबा ने कहा....

<u>दया</u>

एक दिन बाबा बहुत अच्छे मूड में थे, मूड तो मालिक का सदा ही अच्छा होता था, पर कई बार होता है न एक Touch होता है, एक लहर सी, वो अलग सा ही था। बाबा बोले कि प्यारे हम तो अपने संसार में मस्त थे, पर मेरे मालिक को मेरे पर दया आ गई और मुझे दर्शन दे ही दिये, पर जब दर्शन हुए तो मालूम चला कि दर्शनों के पहले का जीवन तो व्यर्थ गया। मैंने गुरुजी से एक बार पूछा भी था कि इतनी देर से क्यों ? तो गुरु जी ने कहा कि **''पुत्त ये सब भी तुझे देखना था'' !** जब से गुरुजी के दर्शन किए उसी पल से हर एक क़तरे में उस मालिक की दया नज़र आई। मालिक ने प्रकृति बनाई - दया, पृथ्वी बनाई - दया, अपने सब बच्चों को शरीर देकर आनंद लेने के लिया पृथ्वी पर भेजा - दया, स्वयं अपनी हर आत्मा में बसकर संग में आये - दया, कर्म करने के लिया साँसे दी - दया, सही ग़लत का भेद करने के लिये बुद्धि दी - दया, कुछ समझ नहीं आये प्रार्थना करने का अधिकार दिया - दया, आत्मा confuse हो गई तो मालिक स्वयं शरीर लेकर आ गए - दया, हम सबको कहाँ - कहाँ से इकठ्ठा करके एक परिवार बना डाला - दया, हर ताले की **"एक चाबी-सेवा"** बना दी - दया, स्वयं अपने पूज्य शरीर से हम सबकी सेवा की - दया, Nonsense को sensible बनाया - दया और फिर भी कहीं कुछ बच गया - तो बोल दिया, **''स्थान ते मत्था टेक देयो, बाकी मैं देख लांगा ''** - भरपूर दया।

कौन - सी दया बची, जो गुरु जी ने हम पर या पृथ्वी पर नहीं करी। उनकी संतान होने के नाते हम सबका बस इतना सा ही कर्म है कि हर एक ज़र्रे में बरसती उस मालिक की दया का सदुपयोग करें, जबकि ये भी मालिक ही करवाएगा, पर हम सबकी कम से कम Intention तो होनी चाहिए।

एक बात बताऊँ, आप किसी को बोलेंगे तो नहीं, मैंने झट कहा - दया करें मालिक, नहीं बोलूँगा जी, english में promise बोलो - मैंने कहा - जी Promise. तो बाबा ने बताया कि असल में शिष्य गुरु पे दया करता है जब वो ध्यान गुरु में धरके जीवन का सदुपयोग करता है । गुरु जी ने तो दया सब कर ही दी, अब बारी शिष्य की है! फिर बोले - अब आप बताओ, आप मुझ पर दया कब करेंगे ? मैंने परम पूज्य चरणों में सर रखकर प्रार्थना की कि बाबा दया करें, तो बाबा ने अपने हाथ से मेरे कमर में Tickling की और बोले - अच्छा प्यारे आपको भूख़ लगती है, मुझे भी लगती है, आपको थकान होती है, मुझे भी होती है, आपको दया लगती है तो मुझे भी लगती है ! जब बाबा का थोड़ा mood समझ में आया तो मैंने प्रार्थना में एक शेर सुना दिया : -

ए शमा मुझे फूंक दे, मैं न मैं रहूँ, तू न तू रहे, यही इश्क़ का है दस्तूर,

चारों तरफ है दया भरपूर !

अगले ही पल बाबा ने अपने - चिर-परिचित style में बोला - अल्ललाहह, आप तो शायर हो गए ! मैं इस सबके बीच उनके मौका देते ही बोल रहा था - जी मालिक दया, जी बाबा दया और आगे mood में बाबा बोले - एक बात तो है प्यारे - आप सुर की बात करते हैं। मैंने फिर प्रार्थना लगाई, जी मालिक जी, जी, जी, जी ......, यहाँ भी उनका रुकने का mood नहीं था बोले- एक बात बताओ प्यारे, आप इतने intelligent कैसे हुए? मैंने उनके बाईं जाँघ पर दोनों हाथ जोड़कर रखे और बाबा की तरफ देखा (मुस्कुरा रहे थे) और बोला कि जब तक आप .... को Intelligent कहेंगे तब तक मैं intelligent ही रहूँगा। इसके बाद मेरा बाबा जो ठहाका लगाकर हँसा वो expressions शब्दों में नहीं आ सकते। खूब हँसने के बाद बाबा बोले - वाह प्यारे खुश कर देते हो ! मैंने फिर माथा टेक के प्रार्थना की - जी मालिक दया ! आगे फिर बाबा ने बोला कि प्यारे हम गुरु से क्या प्रेम करेंगे जो मालिक हम सबसे करते हैं और वास्तव में जितना प्रेम गुरु जी हम सबसे करते हैं उसका १% भी हमें करना आ जाए तो क्या बात है, सब समझ में आ जाएगा।

बाबा ने कहा। ......

शिक्षा

जिन दिनों बाबा ने गुरुकुल स्थंपना और education का शुरू किया था, ये उनी दिनों की बात है। एक शाम बाबा के साथ बेटा हुआ था, तो बाबा ने शिक्षा के लिए विस्तार से बताया। ऐसा नहीं कि उसे पहले कभी नहीं बताया था, पर उस शाम बाबा मूड में थे तो सिर्फ शिक्षा पर बोले, इतनी सेवा करने के बाद उन्होने शिक्षा को क्यों उठाया? उस पर बाबा बोले, बात यू है कि "इंसान का स्तर गिरता जा रहा है, इंसानियत बहुत नीचे उतर चुकी है... मालूम है क्यों? मैंने झट बोला - "जी दया के सागर - क्यों?

तो बाबा ने बताया कि, जिस प्रकार शरीर में खून दौरा करता है, और शरीर में energy रहती है, उसी प्रकार अगर समाज को शरीर समझो, तो इसके अंदर दौरा करने वाला जो खून है, वो दौरा है और दौरा दान की वस्तु है जो गुरु से प्राप्त होती है। पुराने समय में शिक्षा के लिए गुरु चरणों में, गुरु आश्रम में जनपरता था। राजा भी अपनी संतान को लेकर गुरुकुल में अप्पणी प्रार्थना ले कर पहुचते थे। गुरु उनकी संतान को सुविकर कर ले, और शिक्षा का दान दें, और गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त किए हुए आगे चल कर चक्रवर्ती राजा बना करते थे। गुरु से शिक्षा

प्राप्त प्राप्त करने वाले गुरु के साथ ही रहते थे। उनका खाना, रहना भी गुरु के यहाँ ही होता था और गुरु जो भी शिक्षा उनको देता था वो सेवा से जुड़ी होती थी अर्थात practical होती थी।

बाबा बोले कि आज के युग में गुरुजी द्वारा दी हुई सेवा, शिक्षा जब अंदर उतरेगी, तभी आज का इंसान "मानव" बन पायेगा। इसीलिए सबके भले के लिए शिक्षा को लेकर चल रहा हूँ। गुरु द्वारा दी गई शिक्षा का अर्थ शिष्य के जीवन में ये होता है कि उसमे sense आ जाती है, उसको vision प्राप्त हो जाता है और एक sensible शिष्य ही creation में भाग ले सकता है, नहीं तो disturbance ही create करता है, इस पर मेंने लिखाया भी था। मूर्ख की सेवा में कष्ट-ही-कष्ट, ज्ञानी कि सेवा में मस्त-ही-मस्त।

बाबा ने बताया कि जिस मोड पर इस समय प्रिथीवी पहुँच चुकी है, यहाँ से आगे का मार्ग तो शिक्षा ही देगी। गुरु-शिक्षा होगी तो सद्‌बुद्धि आएगी, और सतबुद्धि सामर्थ करने के लिए चयन कर ही लेती है। मालिक करा ही लेता है। शिक्षा पा कर गणपति का उदय होगा और शिवलिंग पर जल चड़ा कर गणपति पूजा करेगा।

जब बाबा ये सब वचन अपने मुख से कर रहे थे, तो अकस्मात मैंने मालिक कि आँखों में देखा, उन पवन आँखों में इनकी गहराई, जवाबदारी, गुरुयज्ञ भरी हुई थी। ऐसा लग रहा था कि मालिक का पवन शरीर तो मेरे सामने है, पर वो गुरु तत, वो शाश्वत energy मानों किसी नवीन युग के निर्माण में लगी हुई है।

बाबा अक्सर बोला करते थे, कि गुरु era के हिसाब से कार्य करता है और इस युग का अंत होगा, फिर बाज़ार जाके दूसरा युग खरीद के लाओगे, एसा नहीं होता, आदि और अंत साथ-साथ चलता है। ये युग आगे बड़ रहा है। साथ-साथ गुरु युग का निर्माण भी हो रहा है। "ये matter आप serious नहीं हो जाना"। sincere रहना आगे चल कर गुरुजी के तैयार किए हुए बच्चे ही सेवा करेंगे। जब ढाई – ढाई (2½ - 2½) कोस पर दिया जलेगा। जीवन में कोई भी कार्य किया जाता है तो पहले मन में जरूर आता है, उसके लिए मन बनाते हो, तो कार्य करते हो बस उसी तरह **अद्यात्म**, भक्ति, सेवा इसको भी मन से समझ लेना और मन बना लेना तभी, गुरु-शिक्षा भी ग्रहण कर पाओगे। शरीर यहाँ हो आपका मन कहीं और हो तो नहीं होगा, क्योंकि गुरु में लहर होती है, वो लहर मे सबको एक समान बाँटता है, पर सेवा वाला सदुपयोग कर जाएगा। आप एक बाप होकर अपनी संतान कि अच्छी-से-अच्छी शिक्षा दिलाते हो, भेले शिक्षा का स्टार कितना भी गिर गया है, और आपको कौनसा मालूम 'भाई साहब शिक्षा का स्तर गिर गया है'। आपके 100 बाप को नहीं मालूम शिक्षा का स्तर गिर गया है, और में शिक्षा इसलिए दिलाते हो कि आपकी संतान समाज में खुश और चैन से रह सके।

उसी तरह परम-पिता, गुरु अपने बच्चों को शिक्षित करतें है, कि उनकी संतान प्रिथीवी पर जीवन का सदुपयोग करके आनंद पाये। गुरुजी के साथ रहते हुए ये समझ में आया इसलिए में इसको लेकर चल रहा हूँ। बाकि होगा तो सब मालिक कि दया से।

तुझे मालूम है कि मालिक विध्यापीठ के साथ Himgiri का tie-up भी हो गाय है। course तैयार करके उन्हे दे भी दिया है। जो भी student interested हों वो

admission वहाँ लेंगे, fees वहाँ देंगे। शिक्षा यहाँ लेंगे। उनका रहना, खाना फ्री। जो intelligent होंगे, उन्हे वजीफा भी दूंगा।

बाबा ने कहा...

ब्रह्म से पारब्रह्म

मेरे प्यारे भोले बाबा , एक दिन लहर में थे तो बोले कि प्यारे जीवन धन्य हो गया, साक्षात् पारब्रह्म के दर्शन हो गए "वाह गुरूजी वाह"।

मैं सामने बैठा था तो बाबे के वचन तो वो मुझे ही कर रहे थे पर अपनी गहरी आँखों से मालिक किसी और ही Trans में थे, मालिक बोले ये पृथ्वी प्यारे ब्रह्म लोक है और 'खड़ाऊँ' पारब्रह्म हैं, तो कुल मिलकर ये यात्रा ब्रह्म से पारब्रह्म तक की ही है। इंसान का ये भाव कि 'उसके करने से सब होता है', कर्ता का भाव रखना ही ब्रह्म है। ये तस्वीर मालिक ने बनाई है, उसके सब रंग भी मालिक ने ही भरे है। इसका एक - एक क़तरा, पूरी की पूरी तस्वीर ही उस मालिक की है और किसी भी painting में पेंटिंग के रंग या कोई भी character, ये नहीं बोलता है कि मैं हूँ। पूरी की पूरी painting ही painter की होती है। पर आप सब लोगो को बुद्धि मिली हुई है , मुख मिला हुआ है इसलिए मालिक की पेंटिंग होते हुए भी आप बोल पाते हैं कि मैं हूँ। मालिक के साथ आत्मा की यात्रा, भ्रम से ब्रह्म और फिर ब्रह्म से पारब्रह्म तक की होती है। मालिक पहले तो संसार से उठाकर नहला - धुलाकर साफ़ करते हैं, फिर सेवा से जोड़कर उसकी पूजा करवा देते हैं। पर इस सब में खूब रगड़ाई और घिसाई होती है। यह सत्य ही है, कोई भी Product बनाने के लिए आप उसके Raw Material की ऐसी -तैसी फेर देते है , तब फाइनल Product बनता है तो ये इंसान नाम का Raw Material जो जन्मो से लगा हुआ है उसको मालिक अपनी दया से, मानव रूपी Product बना ही देते है और जब ये मानव रूपी Product, उसी मालिक की सृष्टि में सदुपयोग करता है और मालिक के ही प्यारो की सेवा करता है तो मानव से मालिक का रूप होता है। इसी को बोलते है - Waste से Best तैयार करना और सबसे Best बात यह है कि यह सब करते हुए आत्मा को ख़बर भी नहीं लगने देते कि हो क्या रहा है , कर क्या रहे हैं। प्रेम से खेल - खेल में कर डालते है। सामने वाले की आँख तो तब खुलती है कि जब चार लोग आकर बोलते हैं कि आप अच्छे लग रहे हैं तो हो सोचता है - मैं तो कचरा हूँ, मैं क्या अच्छा लग रहा हूँ।

पर जब वो स्वयं पर आँख डालता है तो उसे पता चलता है कि मैं तो साफ़ सुथरा हो गया।वैसे तो यात्रा घर से ही शुरू हो जाती है, परन्तु पर जब ज़रा सा भी एहसास हो जाए तो समझ लेना कि गुरूजी अब उस आत्मा को Express Highway पर ले आये हैं। यहाँ से आगे अपनी आँख - नाक - कान सब बराबर खुले रखना ताकि गुरूजी की मेहनत का जीवन में भरपूर सदुपयोग हो जाए। पर एक बात है, मालिक तो सबको एक जैसा बाँटते है पर अपनी

आत्मा की अवस्था के हिसाब से हर कोई अपने मन - पसंद गंतव्य तक तो पहुँच जाता है पर वहाँ तक नहीं , जहाँ तक गुरू की मेहर से पहुँच सकता है। इस situation पर एक शेऱ सुनाऊँ ?

चन्द ही दिल मख़सूस होते हैं, महोब्बत के लिए,

ये शय नहीं बनी है, हर किसी के लिए,

जैसे होता है न कि Fifth तक बच्चों को सबको पास कर दिया जाता है पर Sixth से जो Exam का जो result होता है वो Declare होता है, ठीक इसी प्रकार कड़ा पहनने के साथ ही आत्मा की भ्रह्म से ब्रह्म तक की यात्रा शुरू हो जाती है। थोड़ा इधर-उधर भी हो जाए तो गुरु Fifth पास तो करा ही देता है पर इसके आगे जब आप सेवा से जुड़ते हैं तो Highway पर आ जाते हैं। अब यहाँ से खड़ाऊँ तक की यात्रा का एक - एक पल महत्वपूर्ण है और ध्यान देने योग्य है, गुरूजी द्वारा दी गई शिक्षा उन्ही के ध्यान से यहाँ पर apply करोगे तो आगे का मार्ग मिलेगा। ये है ध्यान की यात्रा, कराता तो मालिक ही है पर ध्यान आपको ही देना है, क्योंकि इस सबमें गुरु का कुछ नहीं जाएगा और आप नहीं कर पाएंगे। आप कहेगे - जी अभी नहीं हुआ, "गुरूजी कहेगे - कोई नहीं पुत, अगले पल कर लईं”। उनका एक पल होगा, आपका एक जन्म निकल जाएगा। इसीलिए मेरा आप सबसे अनुरोध है, सलाह है, मशवरा है, निवेदन है, प्रार्थना है कि गुरु के संग अपने इक पल का, हर इक स्वाँस का सदुपयोग करिए। धन्यवाद !

बाबा ने कहा ....

परमार्थ

एक बार बाबा ने बोलै कि इंसान स्वार्थी है , स्वार्थी यानि स्वार्थ से भरा हुआ , स्वार्थ के अर्थ हैं - अपने स्वयं के अर्थ की पूर्ति के लिए लगे रहना , जबकि ये इंसान नामक प्राणी संतान, प्रकृति की है, जो परमार्थी है। परमार्थी का अर्थ वो कार्य या वो अर्थ जिससे सबका कल्याण हो। प्रकृति की संतान होकर भी ये इंसान बिना गुरु के परमार्थ की राह पर नहीं चल पाता है। जबकि मालिक ने दो हाथ, दो पाँव दिए हैं , एक स्वार्थ का एक परमार्थ का , यदि ५० - ५० भी कर ले तो सब हो जाएगा। परमार्थ की संतान होने के बाबजूद सारा जीवन स्वार्थ में गुज़ार देता है क्यूँकि कुछ तो अपने साथ पीछे से लेकर आता है बाकी इस जीवन के घर-परिवार के संस्कार और युग का प्रभाव। आज के इंसान ने जीविका को जीवन मान लिया है , सुबह आँख खुलते ही जीविका के लिए निकल जाता है और रात को थका हरा लौट कर बिस्तर पर गिर बेहोंश हो जाता है। अपनी इसी बेहोंशी में दिनचर्या को अपना जीवन समझ बैठा है। क्या कभी किसी ने किसी के मन में , किसी की अंतरात्मा में ये प्रश्न जानने की उत्सुकता हुई कि मालिक ने जो हमें इस पृथ्वी पर भेजा तो क्या इस तरह गाय - भैंसों की तरह जीवन जीने के लिए भेजा ? जब आपके यहाँ संतान पैदा होती है और आप माता - पिता बनते हैं तो आप उसको जीवन की शिक्षा के लिए स्कूल में ले जाते हैं , संस्कार देते हैं , मेहनत करते हैं , वो सिर्फ इसलिए कि वो सिर्फ अपने पाँव पर खड़ा होकर रोज़ सुबह कमाने निकले और रात को आकर बेहोंश होकर सो जाये। या ये भाव रहता है कि बच्चे अच्छा पढ़ लिखकर अच्छा settle हो जाये और फिर सुख और चैन की , आराम की जिंदगी जिये। तो आपकी भावना तो इसमें अपने बच्चों के प्रति सुख और आराम की निकली। जब आप लोग माता - पिता होकर अपने सुख की कामना करतें हैं और उनके settle हो जाने की भावना रखते हैं , settle यानि कर्म से स्थापित हो जाना तो उस परमात्मा ने , उस मालिक ने आपको किस चाहत और भावना से पृथ्वी पर भेजा होगा। जिस प्रकार एक अच्छी संतान अपनी माता - पिता की ख़ुशी के लिए कर्म करती है वैसे ही एक सेवक अपने गुरू की ख़ुशी के लिए सेवा करता है। तो क्या यही सब सेवा है ? जो आज का इंसान करने में लगा हुआ है, सेवा तो वो थी और वो भी निःस्वार्थ, जो गुरू जी कर गए , अपने घर की देखभाल भी करते थे , नौकरी भी करते थे और उसके साथ - साथ अपनी शरण में आये हुए हर एक श्रद्धालु के लिए, उसके कल्याण के लिए हर समय मिलते थे। सुबह - शाम , दिन - रात , Even बिना कुछ खाये-पिये, गुरूजी सदा जन - कल्याण में लगे रहते थे। यही करना उस मालिक का स्वभाव है , अपने दर से सबको खुश करके भेजा करते थे और सब खुश हैं - इसी से गुरुजी हमेशा खुश रहते थे। परमार्थ में आप सबको खुश करके खुश होते हैं और स्वार्थ में आप सिर्फ अपने लिए ख़ुशी खोजते रहते हैं , आप Personally खुश होंगे के नहीं ये तो आपके कर्मो पर निर्भर करता है पर हाँ यदि परमार्थ से जुड़े हैं १००% खुश होंगे। जब तक शिष्य दिमाग से चलेगा तब तक स्वार्थी रहेगा और जब गुरु को माथा टेक कर दिल से करेगा , तो परमार्थ की यात्रा शुरू होगी ....

शिष्य - दिमाग स्वार्थी, गुरु - दिल परमार्थी !

ये सेवा मन वालो की लाईन है वैसे भी मन गुरु का होता है और अगर अपने अपना मन गुरु को अर्पण कर दिया तो मालिक सेवा करा ही लेगा।

मन वाला मन की पाए, मनमानी वाला मुँह की खाये।

तो इस मालिक के दिए हुए जीवन का अर्थ सही मायनो में कोई भी जानना चाहता है और जानने के बाद जीना चाहता है तो उसके लिए परमार्थ की राह पर चलना ही होगा। ये Natural Law है ठीक उसी प्रकार अपनी भूख मिटाने के लिए हमें खाना ही पड़ता है , थकान दूर करने के लिए सोना जरुरी है उसी तरह ये जीवन जो मालिक की दया और सेवा से प्राप्त होना है उसके आनंद के लिए सेवा और परमार्थ से जुड़ना ही पड़ेगा।   परमार्थ आत्मा है , स्वार्थ शरीर है। परमार्थ main है , स्वार्थ time pass है। इंसान स्वयं तय करे कि उसको जीवन जीना है या time pass करना है। प्रकृति सबको समभाव से देती और हर एक को अपने भाव के अनुसार देती है।

बाबा ने कहा। .....

अंदाज

क्या करूँ अंदाजे बयाँ , मैं अपने बाबा का ,

जहाँ शब्द ही काम पड़ जाते हैं दस्ता के लिए।

एक बार बाबा गुरु जी के साथ अपनी जीवन यात्रा के पावन विषय के बारे में बता रहे थे , बाबा ने बताया कि प्यारे जीवन वही है जो गुरु के साथ में बीते बाकी तो बोझ ढोने के समान है। गुरु के साथ गुजारे हुए पल , दिन , साँसे , golden होतीं हैं। बाबा ने अपने बीते हुए दिनों के बारे में यद् करते हुए कहा कि मेरे साथी (Batch mates) अमज़द अली खां , बिरजू महाराज , प्रताप पवांर , उमा शर्मा आदि थे। ये सब के सब कहाँ के कहाँ पहुँच गए और मैं फ़क़ीर हो गया। मैने प्रार्थना रूप में बाबा को बोला कि वो जहाँ पहुँच गए , वहाँ तो पहुँचना तो आपके लिए बहुत सरल था , पर जहाँ आप पहुँच गए वहाँ तक पहुंचना उनमे से किसी के बस की बात नहीं है। बाबा बोले - हाँ प्यारे ये तो बात है कि मैं गुरु चरणों की धूलि हो गया और एक बात बताऊँ , गुरु - दर्शन के बाद कोई इच्छा बाकी बची ही नहीं, गुरु जी ने अपना बनाकर धन्य कर दिया। " वाह गुरूजी वाह " पर क्या होता है कि अब बूढ़ा होने लगा हूँ न और गुरूजी की दया से Home Work भी पूरा है। तो कभी कभी ये सब भी मन में आ जाता है। It is entertainment channel . पर आप दिल पे मत ले लेना , मैंने फ़ौरन हाथ जोड़कर प्रार्थना की - जी मालिक दया भरपूर , मेरा तो है ही नहीं आपका ही दिल है सो आपके चरणों में है। बाबा खेलने के मूड़ में बोले - चरणों में कहाँ पर है ? मैने झट बोला - जी पादुका के तले , तो बाबा ने भी फ़ौरन कहा - चल - चल चप्पल के नीचे तो फर्श है , सुसरा ऐसे ही गप छोड़ता है। ये Department मेरा है। मैं सबसे बड़ा झूठ और सबसे बड़ी गप्पें ठोकता हूँ , आप मेरे department में घुसने की कोशिश भी मत करना , मैने पुनः प्रार्थना रूप में कहा - मालिक दया करें , चरण - धुली कर दें तो जीवन धन्य हो जाए , I Love you Guruji , बाबा ने भी कहा - I Love you too . पर एक बात है प्यारे कि आप माता जी के प्रिय हैं और जो तेरी माँ का प्रिय हो वो मुझे वैसे ही प्यारा होता है। मैं मन में एक पल में उनकी कराई हुई यात्रा का अंदाज सोचकर मुस्कुरा रहा था। मैंने फिर प्रार्थना की - जी मालिक सत्य वचन, बाबा फिर बोले कि - आप सही हैं पर गलत मैं भी नहीं हूँ , पहले ही बोल देते , मैने चरणों को पकड़कर प्रार्थना की - मालिक आप दया के सागर हैं, दयालु, दया कीजिए , मेरी अन्तरात्मा में तो सब आनंद चल ही रहा था कि चित भी इनकी - पट भी इनकी, सिक्का इनके बाबे का। यह एक ही बार का किस्सा नहीं है , बल्कि यह मालिक का स्वाभाव था। अपने हर बच्चे के साथ वो इसी प्रकार खेल - खेल में यात्रा कराते थे और कहा भी करते थे कि मेरा Home Work पूरा है। गुरूजी ने कहा , अब तू खेल सकता है , इसीलिए मैं आप सबकी आत्माओं के साथ खेलता रहता हूँ। जब भी बाबा अपने गुरु के साथ बिताये हुए पलों के बारे मैं वचन करते थे तो उस समय वही माहौल वहाँ भी create हो जाया करता था , मेरा व्यक्तिगत experience और अनुभव तो यही है। बाबा बताया करते थे कि यार जिन दिनों में गुडगाँव रहता था वही जीवन का सच्चा सुख था।

जहाँ कहीं कोई सेवा दिखती थी , मैं लग जाया करता था। जब मैंने देखा कि गुरूजी ने परिवार के रहने के लिए तो कोठी बनाई थी और अब यहाँ पर हम इतने सारे सेवादार रहते हैं तो मैं एक खपच्ची लेकर पीछे गटर खोलने पहुँच गया, कि मालिक ने तो अपनी लहार में घर को ही 'दर ' कर दिया। इतने सारे लोगों के इस्तेमाल से कहीं नाली बंद न हो जाए। माता रानी स्कूल में Job करती थीं , उनको स्कूल ले जाने की और स्कूल से वापिस लाने की सेवा भी मैं अपनी गाड़ी में किया करता था। बब्बे और नीटू के बाल भी मैं घर पर ही काट दिया करता था। वास्तविकता है और मेरा स्वभाग्य है कि बाबा के सभी हाव - भाव , ये सब व्यक्त करते हुए मैनें देखे। सच में ऐसा लगता था कि कोई मासूम बच्चा अपने माता - पिता के साथ बिताये पलों को सिमरण कर रहा हो। ऐसा निराला , अनूठा और पावन अंदाज था मेरे सर्वे - सर्वा का।

(इस विषय में मैंने अपनी भावनाएँ जरूर व्यक्त करी हैं पर तभी जब मेरे बाबा ने कहा। .....)

बाबा ने कहा......

महान-प्रधान

एक बार बाबा के साथ यात्रा कर रहा था उसी यात्रा के दौरान बाबा प्रकृति और मानव के रिश्ते और रहस्य के बारे में बता रहे थे। बाबा ने बताया कि मानव रचना से पहले प्रकृति की रचना हुई। सृष्टि प्रकृति की रचना है। प्रकृति का स्वभाव पैदा करना, पालना, सवारना, बाँटना और देना होता है और अपने स्वाभाव को प्रकृति कभी भी नहीं बदलती। युगों से ऐसा ही चलता आ रहा है और युगों तक ऐसा ही चलता रहेगा। प्रकृति महान है यहाँ सुनते ही एकदम मेरे मन में आया कि प्रकृति महान है? तो मालिक? क्योंकि मेरी जानकारी थी कि मालिक महान हैं। बाबा के मुख से ऐसा सुनते ही बड़ा आश्चर्य सा हुआ क्योंकि गुरु के बाद सबसे बड़ा शब्द मेरी जानकारी के हिसाब से महान था। बाबा अपनी अनूठी सी लहर में वचन कर रहे थे इसीलिए मैंने अपनी अपने मन में ही रख के जो बाबा बता रहे थे उसमे ध्यान लगाया। गुरु शिव, शिव-शक्ति, प्रकृति और मानव बाबा इन सब विषयों के बारे में वचन कर रहे थे बाबा ने बोला कि मैं किसान हूँ हर ज़रुरत की चीज़ की खेती करता हूँ और फसल उगाने के लिए हल चलाता हूँ। महान है ये प्रकृति कि एक बीज लेकर फल-फूल फसल के साथ सैंकड़ों बीज भी लौटाती है। ये प्रकृति सच में महान है जो मालिक की आज्ञा में सदा रहती है। इंसान भले ही इसके साथ जानवरों जैसा बर्ताव करे पर प्रकृति सब सह लेती है। सच में मालिक की रचना महान है ये Clear हो ही गया था कि मुझे कि मन के मालिक ने मेरे मन की पढ़ ली है। इसीलिए बार-बार उसी भावना के साथ खेल रहे थे। बार-बार प्रकृति महान बोल रहे थे। ये बाबा की मेहर थी कि मैं बाबा के मुख से निकलने वाले वचनों की इंतज़ार में था कि कब ये राज़ खुले। आगे बताते हुए बाबा बोले - प्रकृति ही शिव की शक्ति है। शक्ति के बिना शिव भी शव है। कितनी प्यारी रचना की है मालिक ने शिव-शक्ति एक दुसरे के पूरक हैं और एक दुसरे से हैं और एक दुसरे के लिए हैं। सब नर शिव का ही अंश हैं और सब नारियां शक्ति का प्रतीक। संसार में गृहस्थ आश्रम में भी शिव शक्ति यानी पति-पत्नी को अपने -अपने गुणों में जीवन जीना चाहिए। यदि अपने-अपने गुणों में रहेंगे तो उस घर में गुरु का वास होता है। बाबा ने बताया कि गृहस्थ आश्रम में यदि शक्ति Positive हो तो अपने शिव के साथ सहयोग रूप में चलती है क्योंकि वो ही उसकी Energy है। जिस प्रकार आपकी माताजी ने आज तक हर चीज़ में मेरा सहयोग दिया कभी भी कहीं पीछे नहीं हटीं , ये उस देवी की महानता है मैंने भी तुरंत बोला जी बाबा मेरी माँ का जवाब नहीं।

इसी तरह बाबा के कथन से जुड़ी उनके समाधी लेने से पहले का वचन वो इस प्रकार है , बाबा ने बोला - कमलू तेरी माँ प्रकृति है इस कथन में वे मुझसे पूछ नहीं रहे थे , अपितु बता रहे थे कि तेरी माँ प्रकृति है। ये बताने के समय बाबा के जो expression थे वो यहां शब्दों में नहीं लिखे जा सकते इसीलिए यहाँ clear किया कि वो पूछ नहीं रहे थे बता रहे थे। मैंने फौरन हाथ जोड़ के उत्तर दिया जी मालिक साथ में ही बाबा ने कहा कि तेरी माँ धन्य है, यहाँ आती है तो यहाँ का करती है फिर Mumbai जाती है तो वहां का करती है। फिर वहां का Manage करके यहाँ आ जाती है। सच में बहुत प्यारी है तेरी माँ, मैंने कहा जी बाबा सत वचन इसमें कोई दो-राय नहीं है। तेरी माँ महान है प्यारे। मैंने फिर बोला जी दया के सागर

मेरी आत्मा के साथ खेलते-खेलते मालिक मुझे उस पड़ाव तक ले आए। मैंने प्रार्थना की कि बाबा यदि प्रकृति महान है तो फिर मालिक क्या? फिर बाबा धीरे से मुस्कुराए बड़े प्रेम से धीरे से बोले बाबा प्रधान है। एक नई इतनी सरल definition सुनकर जीवन धन्य हो गया।

बाबा ने कहा।

संतुलन

शुरू के दिनों में एक बात बाबा अक्सर बोला करते थे - "Follow the Guru and balance yourself." बाबा कहा करते थे जीवन भर आप कुछ न कुछ follow करते रहते हैं और खुद को balance करते रहते हैं।

गाड़ी चलाते हुए, जिस जगह भी आपने जाना है वहां की road को follow करते हो और driving में खुद को balance करते हो। यदि bus पकड़नी हो तो bus को follow करते हैं खुद को balance. खाना खाते हुए आप रोटी को follow करते हो मुख में डालने और खुद को balance करते हैं ! तो हरेक क्रिया में

सबके पास भरपूर experience है follow करने का। इसलिए जिस चीज़ की practice है उसी को यहाँ apply करदो! जीवन के सदुपयोग के लिए या परिस्थितियों को face करने के लिए, Always follow the Guru and balance yourself॰ Act as per the situation. Tailor also cuts the cloth according to your size. जो-जो जीवन में सब करते हैं और करने का अभ्यास है, मालिक वही सब भक्ति में कराते हैं। बस फ़र्क ये है कि संसार में आप स्वार्थ के लिए करते हैं और परमार्थ में भक्ति के लिए करते हैं।

ये भी गुरूजी की अपार दया है कि भक्ति में भी वही करवाते हैं जिसका अभ्यास होता है। हमारे जीवन भर का अभ्यास भी भक्ति में कम पड़ जाता है। यदि प्यारे मालिक ने भक्ति में भी कुछ नया करने के लिए कहा होता तो क्या होता। जीवन में जब भी किसी भी परिस्थिती से गुज़रो तो उसमे यह ध्यान देना चाहिए कि गुरूजी होते तो क्या कहते। गुरूजी होते तो कैसे करते। गुरूजी होते तो क्या करते। बस इसी तरह आपको हर परिस्थिती में balance करना है। Otherwise भी जब कोई भी कार्य गुरु में ध्यान रख कर किया जाता है तो कुदरत उसको

पूरा करने में सहयोग देती है। कभी भी किसी कार्य को करने की जल्दी नहीं करनी चाहिए। प्रकृति ने 9 महीने लेकर हमें पैदा किया, तो अर्थ निकला सहज पके सो मीठा होए।

सब कुदरत के ही हैं, तो natural way से हर परिस्थिति को देखना और समझना चाहिए। कोई भी परिस्थिती आती है तो आप धीरज रख कर, आराम से उस परिस्थिती को देखो, समझो फिर गुरु का ध्यान करके जो आप उस परिस्थिती में अच्छा कर सकते हैं वो करो। मालिक सब भली करता है। वैसे इस चीज़ का भी सबको जीवन में अभ्यास भरपूर है। उबलती हुई चाय आप एक दम से नहीं पीते हैं , धीरे-धीरे ठंडा करके पीते हैं। छत पर जाने के लिए सीढ़ियों को use करके चढ़ते हैं सीधा छत पर नहीं पहुँच जाते। आपने गुरु का कड़ा पहन रक्खा है। किसी परिस्थिती में घबराना नहीं चाहिए। क्योंकि जो भी परिस्थिति आई है वो कुदरत ने हमारे भले के लिए ही भेजी है , तो उस परिस्थिती को गुरु के ध्यान से face करना चाहिए। परिस्थिती को face करना आपका solution की तरफ़ पहला कदम होता है। जब भी गुरु के ध्यान से संसार को देखोगे तो हर एक कण में गुरु की दया समझ आ जायेगी। जब आप संसार में स्वार्थ के लिए अपने कार्यों को बख़ूबी करना जानते हैं तो उसी approach से भक्ति में भी आप कर सकते हैं। गुरु हर सांस में साथ ही होते हैं बस शिष्य को गुरु का सदुपयोग करना आ जाए और ये भी मालिक करा ही देता है, जब शिष्य निःस्वार्थ सेवा की भावना लेकर चलता है। "It is the most simple to follow the Guru and balance yourself."

बाबा ने कहा।

अमानत

एक दिन सर्वे-सर्वा बाबा के चरणों बैठा हुआ था, तो बाबा ने दया बरसाना शुरू करी। बाबा बोले प्यारे आपके घर में मेहमान ज़्यादा आ गए कटोरियाँ कम पड़ गईं तो आप क्या करोगे?

मैंने झट उत्तर दिया मालिक, पड़ोसी के यहाँ से कटोरी ले आए। बाबा बोले – "very good.

फिर क्या करेंगे?" मैंने उत्तर दिया – पिता परमेश्वर इस्तिमाल के लिए लाए हैं सदुपयोग करेंगे, बाबा बोले –वाह very good ।और फिर उसके बाद मैंने कहा –फिर झूठी कटोरी माँज कर साफ कर लेंगे, बाबा ने कहा–और फिर ? मैंने कहा जी ,पड़ोसी को कटोरी लौटा देंगे? तो बाबा बोले, खाली कटोरी लौटा देंगे, तो मैंने झट से माफी मांगी 'जी' नहीं 'sorry' बाबा उसमें थोड़ी चीनी डाल के लौटा देंगे। तो फिर बाबा ने पूछा – पर ऐसा क्यों करते हो? मेंने उत्तर दिया – बाबा किसी से कुछ मांग के लाते है तो उसको खाली नहीं लौटाते, कुछ मीठा डाल के लौटाते है। ऐसा परिवार में बुज़ुर्गों से सुना है। बाबा बोले बिलकुल सही सुना है, पर एक बात बताओ कटोरी ही तो लाये थे लौटने कि क्या ज़रूरत?

समझ में तो आ गया था कि पिता-परमेश्वर आक कोई बड़ा राज़ सरलता से पढ़ाने और सिखाने के mood में है। मैंने भी अपनी पूरी intelligence लगा के उत्तर दिया – मालिक दया किजिये, कटोरी तो पड़ोसी की है, हम कैसे रख सकते है? कभी किसी की अमानत में खयानत नहीं करनी चाहिए। ये मेरा उत्तर देते ही – बाबा बोले वाह प्यारे एक कटोरी के लिए आपने इतनी sense है उस मालिक के दिये हुए जीवन और साँसों, 'जो उनकी अमानत है' आप लोग non-sensically इस्तेमाल करते है? क्या कभी किसी के मन में आत्मा में ये sense आई कि इस जीवन में न जाने क्या-क्या बनने का claim कर देते हैं! वो उस मालिक की अमानत है। उस मालिक की दी हुई साँसों का क्या हाल करते हैं, जैसे बाप का माल हो।

फिर एकदम थोड़ी तिरछी-सी आँखें करके और मुस्कुराहट के साथ बोले कि – "हाँ, माल तो बाप का ही है"।

बाबा बता रहे थे कि इंसान एक कटोरी प्लेट के लिए इतना sensible है। पर जब बात जीवन की आती है, तो लल्लुओं की तरह मुँह खोल कर खड़े हो जाते हैं – 'गुरुजी आप दया कर दो, शक्ति दो'।

मेरे प्यारे, दाया तो सब पर भरपूर है और दया तभी तो आप एक कटोरी से भी अमानत का अर्थ जान लेते हैं। परंतु, इसी जानकारी को कि, (आपका ये जीवन जो उस मालिक कि अमानत है), के बारे में जानने के लिए apply नहीं करते हैं।

बात सही है, हाँ~ना तो बोलो? मैंने प्रार्थना की - हाँ जी...

देखो सारी रचना रच के और intelligence बना कर के भी, हम उसको भोला-भण्डारी बोलते हैं। intelligent भण्डारी नहीं बोलते हैं! आप उसकी साँसों का सदुपयोग करते है या दुरुपयोग करते है, वो gentle-man है किसी को कुछ नहीं कहता है, पर एक बात आपको बता दूँ, कि 'वो' फोकट में देना जनता है और सूद समेत लाना भी उसको आता है। वापिस

जा कर अपनी हर एक स्वांस का हिसाब सबको देना है, जो अपनी साँसों का सदुपयोग करके जाता है, उसके लिए वहाँ भी सब free है, नहीं तो सूद समेत लौटना पड़ता है। वैसे भी जब आप किसी की अमानत इस्तेमाल करते है तो आप में एक sense का भाव जगरीत राहत है, इसी तरह यदि आप मालिक के दिये हुए जीवन को भी sensibly इस्तेमाल कर लेते है तो यात्रा का भी आनंद आयेगा और वापसी में बुड्ड़ा बाबा के साथ चाय भी पीने को मिलती है। इसीलिए कहते है न, सब कुछ है तेरा तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा!!!

बाबा ने कहा।

सजदा

एक बार गाड़ी में जाते हुए मैंने बाबा को सजना और सजदा पे एक शेर सुनाया बोले – पहला step भी सजदा है और final step भी सजदा है। गुरु को माथा टिक जाए "सजदा " हो जाए , तो गुरु शुरू होता है। किसी भी काम की शुरुआत यानी पहला कदम पूरी सच्चाई और ईमानदारी से अगर चला जाए समझो आधा काम गया , गुरु जी के पहले दर्शन मैं ही अगर सजदा सच्चा हो गया तो समझो क्या बात है। पर होता ये है कि खुली आँख से बेहोंश , जब सजदा करने का समय आता है तो वो पण्डित सजने को चल देता है। तो उसका मन होता है मुझे सजना है क्योंकि सजदा करना है, सजना जो है ये आपको सिर्फ सजदा करना है सजना नहीं है और सजदा का समय सजने में ही गुजर जाता है तो भ्रम स्वरूप हिलने को ही मिलना समझ लेते हैं। बहुत गीत, बहुत सारी शायरी लिखी और पढ़ी थी , सजना और सजदा पे इतनी simplicity एक लाइन में सुनकर कुछ सूझ नहीं रहा था। बाबा के वो सरल शब्द अन्तःकरण में घूमने लगे कि सजना तो है, आपको केवल सजदा करना है – सजना नहीं है। ये मेरे बाबा का परम निराला स्वाभाव था कि मालिक रोज मर्रा की बातो , शब्दों , कर्मो से एक पल में मालिक तक, की राह उजागर कर दिया करते थे। बाबा थे कि 'मालिक की मौज होती है प्यार' , गुरु की लहर रहती है जैसे ही कुदरत कोई भी मौका दे के आगे जी बोलना चाहिए , जैसे गुरूजी ने कहा – चले प्यारे तो आपको जी बोलना है। मालिक तो आपके साथ हैं ही पर आपके जी बोलते ही आपको संग रखेंगे, कर लेंगे और यदि अपने कहा जी गुरूजी बस एक मिनट तो गुरू तो उस पल में निकल जाता है बाकी सिर्फ शरीर बचता है और आप शरीर को गुरु मान बैठते हैं। ये है कि गुरु का शरीर भी गुरु है पर गुरु गुण है , सदा है , पावन energy है तो जीवन में यदि एक पल भी अगर अपने सोच से लगाया तो गुरु तो निकल जाएगा आप खाली खड़े रह जाओगे , It is so simple खाने के समय – खाना , सोने के समय –सोना , नहाने के समय – नहाना तो फिर सजदा करने के समय सजने में क्यौं लग जाते हो क्योंकि

सजना तो है , आपका सजना , सज - धज के भी सजना नहीं है क्योंकि सजना है और वैसे सजना बनावट है तो सजना के आगे क्या सजोगे ? इसीलिए मालिक को सजदा किया जाता है और सजना गर सजदा कबूल कर ले तो जीवन धन्य हो जाता है। मालिक में प्रवेश के बाद इंसान अपने झूठ से अपनी बनावट से कुल मिलाकर अपने विकारों से छुटता चला जाता है तो सब छूटने के बाद जो बचता है, "वो होता है सजदा " . तो मालिक सजना है , शिष्य केवल सजदा करे और वो भी मन से , क्योंकि मन के मालिक तो है ही। ये था गुरु दर्शन प्राप्त होने पर पहला कदम - सजना को मन से सजदा। आगे चलकर शिष्य जब पीछे - पीछे गुरु का नमक खाके , सेवा से जुड़कर कुछ - कुछ तो संवरने लग ही जाता है। मालिक की दया हो तो बहुत कुछ और सब कुछ भी समझ जाता है। पर एक बात तय है वो ये कुछ से सब कुछ समझने में वो समझ जाता है कि उसको संवारने में उसकी सजावट उतार के Pure Product निकालने में गुरु ने क्या - क्या मेहनत करी है। Otherwise भी शिक्षा बांटना और संवारना , गुरु का ही Department है। तीन लोक में और कोई हाथ नहीं डालता , तो सेवा मैँ रत वो गुरु का प्यारा मैं से मय तक की यात्रा कर लेता है। तब उसे समझ में आता है , पहले जो सजदा किया था वो तो शरीर का सजदा है। वो शरीर को किया था, Final सजदा - आत्मा का होता है जो परमात्मा को किया जाता है। गुरु जी की दया और सेवा की शुश्बू से उसको Clear हो जाता है कि वो जो सजदा गुरूजी ने कराया था , वो Final की तरफ चलने की practise थी, पहल थी । तो Final वो सजना ही है 'से ' वो सजना ही है , मैं सजदा हो जाऊँ , तक पहुँच जाना है। गुरूजी सजदा करवाने से सजदा हो जाने की यात्रा करा डालते हैं।

मालिक ने दया की, आप सबने उनको सजदा किया और उन्होंने स्वीकार कर लिया और एक पिता के नाते मेरा आशीर्वाद और शुभकामनाएं है कि आप सब सजदा तो कर ही चुके हैं - मालिक को, अब आप सजदा हो जाए। क्या कहूँ और लिखूँ जो। ....

बाबा ने कहा। ....

खेती

बाबा एक बहुत प्यारा वाक्य कहा करते थे - Our culture is Agriculture. जब बाबा से पहली बार ये sentence सुना था तो हर बार की तरह वही feeling आई थी कि क्या बात है - बाबा।

बाबा कहा करते थे कि सब गुरूजी की संतान हैं , एक दूसरे से मिल लें , एक दूसरे की सुन के और आपस में एक दूसरे से सलाह करके करें क्योंकि गुरु के बच्चों का culture ही agree culture होता है। वैसे भी मैं किसान का बेटा हूँ उस नाते भी मेरा culture, agriculture है। एक ही शब्द से बाबा न जाने कितने सुर छेड़ दिया करते थे। अक्सर बाबा कहा करते थे साथ रहने वाला पाता है। वास्तव में ये मालिक की ही दया थी कि उनके वचन तो सदा ही सरल हुआ करते थे पर इतनी सरलता से समझ में आ जाते थे। बाबा जीविका के साधनो पर बताते हुए बोलते थे कि कृषि सबसे उत्तम है। पहली बात तो ये कि किसान धरती की सेवा करता है, एक बीज से अनेको बीज पैदा कर लेता है और अपना पेट भरने के साथ - साथ औरों का पेट भी भरने की व्यवस्था कर लेता है। उससे भी अच्छी बात किसान धरती की सेवा करते - करते सरल हो जाता है। जो है, जैसा है उसी में खुश रहता है। बाबा कहा करते थे कि गुरूजी से बड़ा कोई किसान नहीं है। पृथ्वी पर आकर भी अपने ही तैयार किए हुए शिष्यों के हाथों से सेवा की खेती करा गए। गुरूजी द्वारा बोये इन बीजों से अनंत काल तक फ़सल पैदा होती रहेगी। ये सब मालिक की धरोहर हैं जो प्रकृति और मानव के कल्याण के लिए अपने प्यारों मैं बाँट गए। बाबा एक बात बहुत प्रेम से बताया करते थे, इंसान को जिस चीज़ की जरुरत हो उसकी, उसे खेती कर देनी चाहिए। बाबा बोला करते थे आपको सुख चाहिए तो सुख की खेती करो, शांति चाहिए तो शांति की खेती करो, प्रेम चाहिए तो प्रेम की खेती करो क्योंकि आप तो खेती कर, कर ही खुश हो जायँगे और अपने आने वाली generation के लिए भी फ़सल का इंतज़ाम कर जायेंगे। दुसरो के हाथ में मेहंदी लगाओ तो अपना हाथ तो पहले ही रंग जाता है। बाबा कहा करते थे किसान create करता है और गुरु की संतान होने के नाते आप सबको भी कुछ create करना चाहिए। मिट्टी में बीज बोकर किसान अपने आर्थिक परिश्रम से फ़सल, फल-फूल, पेड़ पैदा कर ही लेता है। आपकी science का भी यही मानना है कि जिस देश की green belt strong होगी वो देश भी strong होगा। वैसे भी इंसान की तीनों ज़रूरतें रोटी, कपड़ा, मकान उसे प्रकृति से ही मिला। एक अच्छी बात और है कि किसान इतनी मेहनत, इतनी सेवा धरती की करता है और सब करने के बाद वो पैदावार के लिए कुदरत पर ही निर्भर करता है, जबकि business और नौकरी वाले कर्ता भाव से, करते हैं। कितना simple है प्यारे कि हमें तो इस जीवन में गुरूजी मिल ही गए और हमारा सब उन्होंने कर भी दिया, अब हमें अपने जीवन में सेवा की इस पैदावार को हर एक आत्मा तक पहुँचाना है तभी, जो हमें गुरु दर्शनों से आनंद प्राप्त हुआ है - उसी आनंद को मालिक की सृष्टि में बाँटकर हमें परमानन्द होगा।

बाबा ने कहा........

यज्ञ

एक बड़े गुरूवार पे होने वाले यज्ञ की बात चल रही थी तो बाबा ने पूछा कि - "प्यारे यज्ञ क्या है ? इस बारे में आप बताएंगे ?" तो मैंने - जी बाबा कहा और जैसे ही बोलने लगा तो मालिक बोले आप जानते ही हैं। आपकी आज्ञा हो तो मैं कुछ बताऊँ मैंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की - हे मेरे मालिक दया कीजिए तो बाबा बोले - यज्ञ में क्या होता है ? आप यज्ञ करने वाले पंडित को बुलाते हैं, हवं कुण्ड तैयार करते हैं। हवं की पूजा में जो-जो सामान लगता है वो लेकर बैठते हैं। और हवन कराना पंडित का department है। इसलिए जैसा-जैसा वो आपको करने को कहता है आप वैसा-वैसा करते जाते हैं। जैसे वो मंत्रोच्चारण करता है वैसे-वैसे आप करते जाते हैं - बोलो हाँ कि ना - मैंने उत्तर दिया हाँजी बाबा। फिर वो हवं करते हुए देवी-देवताओं का आवाहन करता है। आपसे उनका सम्मान करवाता है। कई तरह की आहुतियाँ आपसे यज्ञ कुण्ड में डलवाता है और finally पूर्णाहुति से यज्ञ संपन्न होता है। और फिर आप उस ब्राह्मण को इतना अच्छा यज्ञ कराने की ख़ुशी में दक्षिणा भी देते हैं बोलो हाँ कि ना। मैंने बोला हाँजी मालिक मैं भी हर बड़े गुरूवार को किसी एक जोड़े को बैठा कर हवन करवाता हूँ कि सेवा का दिन है ये सब बच्चे मिलके कुछ अच्छा कर लें और हवन करते-करते मेरे प्यारों को दृष्टि आ जाए कि मालिक दिया हुआ ये जीवन ही एक यज्ञ है मैंने फौरन अपनी ख़ुशी ज़ाहिर हुए प्रार्थना की - पिता-परमेश्वर क्या बात है ! तो बाबा अपने प्यारे से अंदाज़ में बोले - प्यारे अभी पूरा सुन तो लो , तो मैंने उत्तर में कहा - sorry बाबा, दया कीजिए।

जीवन यज्ञ के बारे में बाबा ने बताया कि मालिक का _________ हुआ ये जीवन एक यज्ञ है, आपकी हर एक स्वांस उस यज्ञ में डलने वाली आहुतियाँ हैं। हर एक स्वांस से आप किसी न किसी कर्म _____ होते ही हैं। और हर एक कर्म का एक देवी-देवता भी होता है जो अपनी स्वांस के सदुपयोग से कर्म करते हुए आप देवी देवताओं को जागृत करते हैं। जीवन रूपी इस यज्ञ का कुण्ड आपकी आत्मा है जो भी आहुती आप डालते हैं , उसका भाव-स्वभाव आत्मा स्वीकारती है। हवन की पूजा करने के लिए आपके पास 33 करोड़ हवन सामग्री है, और ये यज्ञ करवाने वाला आपका गुरु है। जैसा-जैसा गुरु चाहता है, वैसी-वैसी आप उसकी आज्ञा मानते हुए यज्ञ करते हैं तो पूर्णाहुति तक पहुँच ही जाते हैं। पूर्णाहुति मतलब जब आप इस जीवन का सदुपयोग निःस्वार्थ भाव से मालिक की सृष्टि में creation में लगाते हैं। आहुतियाँ डालते डालते आप को धन्य भाव से आ ही जाता है। जब आप गुरु की दया में सर से पाँव तक नहा लेते हैं।

अब आई बारी दक्षिणा की, तो हवन तभी पूरा होता है, जब आप ब्राह्मण को दक्षिणा देते हैं उसी प्रकार आपका हवन यज्ञ भी तभी पूर्ण होता है जब आप मन से मालिक के शुक्र अदा करते हुए अर्पण में दक्षिणा के रूप में उनके चरणों में अर्पण कर देते हैं। यज्ञ पूरा होने के बाद हवन कुण्ड की भभूति माथे पर लगाते हैं अब आपका जीवन-यज्ञ पूरा होने के बाद, आप उस मालिक की दया की विभूति हो जाते हैं और आपका स्थान माथे पर हो जाता है। जीवन भर

कितने यज्ञ करेंगे, उससे सरल यही है कि जीवन ही यज्ञ करदें, कैसी रही ? मैंने माथा टेकते हुए प्रार्थना लगाई मालिक आप लाजवाब हैं। इस पर भी बाबा बोले कि मैं उसका जवाब हूँ, मैंने जी मालिक कहा और बाबा से झप्पी डाल ली।

बाबा ने कहा...

गप

बाबा जो भी हम सबके साथ वचन किया करते थे जीवन, प्रकृति, मानव के बारे में बताया करते थे तो बोला करते थे कि हैं ये सब गप्पें। आप सब ध्यान गुरु में रखना और करना वो जो आपकी आत्मा में आये, बाबा जो भी कभी बताया करते थे वो बहुत रोचक, अनूठा लगता था क्योंकि मालिक जो भी बताते थे वो परम-सरल बताते थे और मेरी जानकारी 'संसार की Theory' होती थी। एक बार ऐसे ही गप्पों का सिलसिला चल रहा था और जैसे ही मैंने उस विषय के बारे में बाबा से कुछ कहा तो बाबा बोले चल...... चल सुसरे गप मत छोड़, गप्पें मारना मेरा department है। मैं पृथ्वी की सबसे बड़ी गप और सबसे बड़ा झूठ बोलता हूँ।

मैंने तुरंत हाथ जोड़के प्रार्थना की मालिक दया कर दीजिए। बाबा बोले प्यारे गप्पें मारना सबसे अच्छी बात है, इधर-उधर की तेरी-मेरी करने से अच्छा है हम उसके गपोड़ी हो जाएँ। गप मारते-मारते गप, गप, गप, गप, गप, फिर उसके पग, पग, पग, पग, पग मिल जाते हैं क्योंकि गप में गुरु आगे और परमेश्वर पीछे रहता है।

अब प्यारे समझ गए होंगे गपों का मतलब ? मैंने कहा जी मालिक। तो बाबा ने बोला कि गप मारना मेरा काम है। इसमें घुसने की कोशिश मत करो ये सब मालिक उसी अपने प्यारे से खेलने के अंदाज़ में कह रहे थे। और तो मेरे बस की कुछ है नहीं बस गप्पें हैं, वो मारता रहता हूँ। सेवा तो माताजी और आप सब बच्चे मिल के बहुत अच्छी कर लेते हैं। और सब Manage भी अच्छा कर लेते हैं। मैंने फिर से हाथ जोड़े और बड़े प्रेम से बाबा को प्रार्थना की की - मालिक आप दया के सागर हैं दया कीजिए, यदि आप कहते हैं कि आप के बस की नहीं है तो इस आपके 'बस की नहीं' की क्या बात है कि साड़ी सृष्टि आप ही के बस है। बाबा अपने उसी प्यारे और लुभावने अंदाज़ ,में आँखें थोड़ी तिर्छी करके मुझे देखा और बोले सुसरे फिर गप छोड़ दी, मैंने अभी कहा था गप मत छोड़ना ये कहते ही बाबा और उनके संग में दोनो खूब

ज़ोर से हँसे। बाबा पाल्थी में बैठे हुए थे तो मैंने उनकी गोद में हाथ जोड़के प्रार्थना की कि मालिक आप धन्य हैं ऐसे ही अपनी दया सब पर बनाये रखिए।

बाबा ने कहा।

शिव-शक्ति

एक दिन बाबा अपनी चाहत की बात कर रहे थे उन्होंने बताया कि प्यारे एक फिल्म शिव-शक्ति पर बनाने का mood है क्योंकि it is very interesting and important subject उस फिल्म में background में आवाज़ गुरु की चलेगी। ऐसे ही फिल्म की बात करते-करते बाबा ने जो इस main topic पर बताया कि ये सृष्टि, ये रचना इसका आधार भी शिव-शक्ति है। रचना हुई भी उनसे है और उन्हीं के लिए हुई है। मालिक ने एक को दो करके पृथ्वी पर भेजा। ताकि वो मालिक की बनाई बगिया में आएं और आनंद लें और वापिस एक हो कर लौटें। ये सारा खेल गुणों का है शिव-शक्ति यदि अपने-अपने गुण में एक दुसरे के साथ रहते हैं तो यात्रा बहुत beautiful होती है पर पृथ्वी पर दोनों अपने गुणों में कम और एक दुसरे के अवगुण ढूंढने में लग जाते हैं। Natural Law है कि जब शिव-शक्ति अपने गुणों में रहेंगे तभी वो अपना significance भी समझ सकेंगे और रचना का आनद भी ले सकेंगे क्योंकि शिव-शक्ति दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। शिव, शक्ति से हैं और शक्ति, शिव की है। शक्ति का काम शिव का ध्यान रखना है, शिव को follow करना है और शिव का कार्य गुरु को follow करना है। दोनों एक दुसरे के साथी भी हैं, दोनों एक दुसरे के लिए भी हैं, और एक दुसरे के सहयोगी भी हैं। शक्ति के सहयोग से ___ क्योंकि वो उसी की हैं तो शिव अपने जीवन का सदुपयोग सरलता से कर सकता है। पर लीला शिव को ही करनी पड़ती है क्योंकि शिव-लीला होती है, क्योंकि पार्वती-लीला नहीं। अपने कर्म करने के लिए शिव को शक्ति लगती है इस तरह शक्ति के जीवन का सदुपयोग होता है। सहयोग से शिव अपने जीवन के कार्य पूरे करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है और उसके जीवन का सदुपयोग होता रहता है। दोनों जब एक दुसरे के साथ मिलकर चलते हैं तो दोनों ही जीवन का आनंद लेते हैं। जैसे आपकी माताजी ने आज तक मेरा साथ दिया, धन्य हैं वो असल में जीवन का आनंद एक-दूसरे को मान देने में है। आप सोचें कि अकेले आनंद ले लेंगे तो possible नहीं है क्योंकि मैंने आपको बताया रचना ही दो से है। सृष्टि में सब जोड़े से चलता है शिव-शक्ति गृहस्थ रूप में रहते हुए यदि अपने-अपने गुणों में रह रहे हैं तो सारे संबंधों का ज्ञान आनंद भी उन्हें मिल जाता है।

गृहस्थ आश्रम को इसीलिए श्रेष्ठ आश्रम कहा गया है क्योंकि वो शिव-शक्ति से होता है और फिर शिव परिवार हो जाता है। बाबा कहा कि हर प्रॉब्लम का solution शिव-शक्ति से ही है क्योंकि लफड़ा भी उन्होंने ही किया है। बाबा ने तो ये भी बताया कि चुनावों पे जो इतना पैसा खर्च होता पैसे को जन-कल्याण के लिए इस्तिमाल करना चाहिए और Parliament में ६ महीने शिव सेवा करे और शक्ति सब संभाले और ६ महीने शक्ति सेवा करे और शिव संभाल ले।

इस तरह दोनों को एक-दूसरे की समझ आ जाएगी। एक दूसरे के गुण भी जागृत होंगे क्योंकि है तो सब इन दोनों के लिए ही। जब Parliament में गुरूजी की खड़ाऊँ स्थापित होंगी और शिव-शक्ति दोनों मिलकर घर और संसार की सेवा भी करेंगे और manage करेंगे तो हमारा देश विशव गुरु हो जाएगा।

इस लिए कहा गया है जिस घर में शिव-शक्ति बसें, उस घर में गुरु बसें।

बाबा ने कहा।

सेवक

बाबा कहा करते थे मानव ही मालिक का रूप है! एक समय बाबा इस बारे में बता रहे थे तो उन्होने बताया- सेवक ही मानव होता है! हम सब गुरुजी के सेवादार हैं और सेवा ही हमारा कर्म है!

बाबा बोले की प्यारे धन्य हैं- गुरुजी! गुरु हमे संसार की भीड़ में से खोजता है! हम पर मेहनत करता है! पूरा का पूरा जीवन संवार देता है और शिष्य स्वीकार कर लेता है!

शिष्य का कर्तव्य गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलना, जोत से जोत जलाना और निस्वार्थ सेवा करना होता है! बाकी सच बात तो यह है कि गुरुजी, दया के सागर, भले हम शिष्य रूप में स्वीकार लें पर हैं हम उनके चरणों कि धूल! वो मालिक हैं और हम उनके सेवक हैं! सेवक धर्म सबसे अच्छा धर्म होता है क्यूंकि एक सेवक के सिर पर सदा गुरु का हाथ रहता है और सेवक गुरु को परम प्रिय होता है ! जैसे आपने देखा कि हनुमान की फोटो स्थान पर सबसे ऊपर लगती है क्यूंकि हनुमान सेवा श्रेष्ठ है, सेवा का प्रतीक है! गुरु अपने शिष्यों, सेवादारों के साथ निस्वार्थ भाव से लगा रहता है, अपनी संतान से भी ज्यादा प्रेम करता है, दिन-रात कोई समय नहीं देखता और अपना पूरा जीवन शिष्य को सँवारने में और स्थापित करने में लगा देता है!

जब मैं गुड़गाँव में गुरुजी के पास रहता था तो गुरुजी 24x7 अपने शिष्यों की सेवा में लगे रहते थे! कभी भी किसी समय किसी को मना नहीं करते थे और 24x7 सेवा करने के बाद भी गुरुजी थकते नहीं थे बल्कि और ज्यादा fresh हो जाते थे! तब अपने राम सोचते थे कि गुरुजी ने तो अपना काम कर भी दिया और कर भी रहें हैं! अब बारी हम सेवादारों की है कि हम गुरुजी की सेवा का किस प्रकार शुक्र अदा करें! मैंने गुरुचरणों में सीखा कि गुरुजी हम सब की आत्मायों के कल्याण में अपने शरीर कि सुध भी नहीं लेते थे!

सेवक का पहला धर्म तो स्वाभाविक ही यही है कि वो अपने गुरु के आचरण को follow करे और गुरु द्वारा बताए हुए मार्ग पर ही चले, पर उसके साथ-साथ यह भी एक शिष्य का परम कर्तव्य है कि वो अपने गुरु के उस पावन शरीर की भी अच्छी तरह से देखभाल करे! गुरु तो आपकी आत्मा सँवारने में लगे हैं तो आप अपना शरीर, अपनी sense मालिक के शरीर की देखभाल में लगा दे! Actually चलता तो सब natural law के हिसाब से ही है तो शरीर भी शरीर केआर हिसाब से ही चलेगा! पर होता यह है कि अक्सर गुरु को मानने वाले यह सोचते है कि गुरु को कुछ नहीं होता, न भूख-प्यास लगती है और न ही थकान होती है क्यूंकि यह तो गुरुजी हैं! जबकि गुरु मालिक का वो साकार रूप है जिसकी दया से सभी आत्मायों को शरीर मिला है!

Knowledge या ज्ञान बस इतना ही काफी है कि गुरुजी मालिक हैं और हम इनके सेवक हैं! इससे अधिक ज्ञान गुरु के आगे नहीं चलता! एक सेवक को जरूरत है तो वो है ध्यान की, कि किस प्रकार वो अपने गुरु की देखभाल करे, उनके आराम का ध्यान रखे, उनके mood को समझे और गुरु की हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखे क्यूंकि गुरु आपकी आत्मा जोकि परम सूक्ष्म है को सँवारने में लगा रहता है! जीवन वही उत्तम है जो गुरु के संग बीते और वो जीवन सर्वोत्तम है जो गुरु की सेवा में बीते! गंगा से भी ज्यादा मान गोमुख का है जो गंगा का उद्गम स्थान है! उसी प्रकार हम जीवन में सँवर गए, सही राह मिल गई, जीवन के सदुपयोग का पता मिल गया, निस्वार्थ सेवा मिल गई तो इन सब का जीवन में मान है पर गोमुख तो हमारे गुरुजी के चरण हैं जहां से हम सेवकों ने सब कुछ पाया है! संसार में जिस प्रकार एक संतान अपने माता-पिता की देखभाल करती है उसी प्रकार, अध्यात्म में या भक्ति सेवा line में जो भी आप कहें या समझें, एक सेवादार (गुरु की संतान) का वही कर्तव्य है कि वो अपने परम पिता की देखभाल करे! सेवा करते हुए तो एक सेवादार अपने गुरु से सेवा का फल पाता ही है! पर अपने गुरु के पावन शरीर का ध्यान रखने वाले सेवादार पर तो पूरी प्रकृति न्योछावर हो जाती है! क्यूंकि applied philosophy is always better then philosophy॰ बाबा बोला करते थे कि प्यारे मैं गुरु नहीं हूँ, गुरुजी ही मालिक हैं! हाँ यदि मेरे जीवन से या मुझ से कुछ सीखना या समझना हो तो यह समझ लें कि इस जीवन को गुरु की सेवा में लगा देना! हर पल, हर सांस गुरु को follow करने और गुरुमय होने में लगा देना!

बाबा ने कहा.......

अन्न

बाबा को मैंने देखा, दया के सागर हम सब पर तो दया कि वर्षा करते ही रहते थे और हम सब को प्रकृति और जीवन के सदुपयोग के लिए हमेशा प्रेरित करते रहेते थे, कि वो स्वयं ही प्रकृति तथा अपने सदुपयोग में लगे रहते थे।

एक दिन बाबा बता रहे थे, कि इंसान को अपनी सुविधाओं और संसार के बारे में हर प्रकार का ज्ञान है, और जो नहीं भी होता वो तुरंत सीख लेता है। जीवन के लिए ये knowledge जरूरी भी होती है। जिस situation में वो होता है उस situation की पूरी जानकारी इकट्ठी कर लेता है। एक हिसाब से ये उसकी समझदारी है। इसी समझदारी को वो अध्यात्म में क्यों नहीं लगाता है और जीवन का सदुपयोग नहीं करता है। वो संसार से तो प्रेम करता है प्रेम तो क्या मोह भी करता है , पार गुरु से प्रेम नहीं करता है। इतनी खूबसूरत प्रकृति की रचना मालिक ने करी है उस प्रकृति को जानने का interest होगा तो भी जान पाएगा। आप किसी कपड़े कि दुकान में कपड़ा करीदने जाते है तो 10 थान निकलवाके उसकी क्वालिटी चेक करते है न, करते है न? मेंने प्रार्थना कि जी मालिक करते है। तो जब जीवा में गुरुजी का प्रवेश हुआ और आप उस मालिक के चरणों में उस दर पर पहुचे तो कभी ये खयाल आया कि ठोरदा देखे, थोड़ा समझें कि गुरुजी क्या करते है? किस प्रकार वो हमेशा आने चरणों में आए

जीवन में उतार लेना चाहिए। गुरुजी ने कितना simple रखा हुआ था, वो स्वयं सा-शरीर सब कि सेवा करते थे, अपने touch से relax करते थे, जल बना कर देते थे, और स्थान पर 24X7 लंगर चलता था। स्वयं सेवा करके मालिक ने कर्मों का महत्व सिखाया। गुरुजी जल से बलवान किस करते थे, और अपने स्पर्श से ठीक किया करते थे। **अपने दर्शनों के लिए आए हु ओं को गुरुजी लंगर करने के बाद ही मिला करते थे।**

गुरुजी के स्थान पर ये तत निकले कि जीवन के लिए गुरु का दिया हुआ जल जरूरी है, गुरु का स्पर्श, गुरु का संग जरूरी है और गुरु का नमक और अन्न जरूरी है। वो कहते है न "जेसा अन्न वेसा मन, जेसा पनि वेसि वाणी। लंगर का

जब गुरु का नमक सेवादार के अंदर जाता है, त उसके विकार खतम होने लागते हैं। स्थान पर आए हुए लोगों कि 50% problems तो लंगर करने से solve हो जया करतीं थी, क्योंकि गुरुजी का नमक उनके अंदर जाता था, तो वो relax होजया करते थे, तो relax इंसान मतलब साफ शीशा, उससे सब ठीक दिखना शुरू जाता था। बाकी 50%

गुरु दया का सागर होता है, इसिलिए गुरु के आचरण में आप दाया ही दया पाएंगे। मिलते तो गुरुजी बाद मैं थे,स्थान पर माथा टीका कर, जल पिला कर, लंगर कराकर, दया कर दिया करते थे। वेसे भी आप कहते है न अच्छी diet से अच्छी बॉडी बनती है, वेसे हे गुरु का लंगर इस the best। not only आपका शरीर बंता है, साथ साथ आपकी आत्मा भी बलवान हो जाती है। बाबा ने बताया कि मालिक तो मालिक है उनकी सेवा में पूरा ब्रम्हाण्ड तीनों लोक

सदा हाथ जोड़ कर कड़े रहते है, और गुर के बाद दूसरा स्थान अन्न भगवान का है। इसके साथ ही बाबा ने बताया, कि ऊपर क्या होता है। बाबा बोले कि यमराज से मिलने के लिए कोई भी देवता आता है, तो काल अपने महल में अपने आसान पर ही बेटा रहता है, पर यदि सिर्फ उसको ख़बर भी लग जाए कि अन्न देव उससे मिलने के लिए आने वाले है, तो अपना सासन छोड़ कर अपने महल के दरवाजे पर उनके स्वागत के लिए खड़ा हो जाता है।

इसीलिए गुरुजी के स्थान पर लंगर चलता रहता है। मालिक ने गुरु के लंगर और अन्न के बारे में बता कर धन्न कर दिया। अपनी समझ से तो में अन्न को पूरी तरह से मान देता ही था, पर बाबा के मुख से जानने के बाद ये ध्यान रखना शुरू कर दिया, कि गलती से भी अन्न के प्रति कोई गलती न हो जाए। में शुक्रगुजार हु हर एक उस वचन के लिए...

जो बाबा ने कहा...

दिल दिमाग

बाबा प्रकृति की हर एक चीज़ कर ज्ञान भी दिया करत्ते थे और सदुपयोग केसे करना है ये भी करा कर सीखा दिया करते थे। एक दिन बाबा ने बताया कि इंसान के अंडर कुछ

उसके दिल और दिमाग matchi-matchi नहीं करते है। बाबा बोल रहे थे किसी भी चीज़ से पहले आप बोलते है,

मालिक केबनाए हुए इस शरीर को आप सर से पाँव तक ध्यान से देखें तो मालिक कि दया दिखती भी है अऔर समझा भी अति है। जेसे उनसे 9 महीने का समय लेके उसने हुमे पैदा किया तो प्रकृति ने पहला message ये दिया, कि कुछ भी होने में समय लगता है, इसलिए हुमे धेरै से रहना चाइए, सहज पके तो मीठा होए। 7 - 8 महीने में अगर माँ जन्म दे भी देती है, तो उस बच्चे को nursery में रख दिया जाता है। अगेन देखें तो मालिक ने सभी आँख नाक कान सभी जीवन का साबुपोग कि लिए दिये है, कि आप प्रेम से देखें, धेरै से सुनें और फिर बोल ले express करें। गुरुजी ने दिमाग ऊपर बाहर कि तरफ, और दिल नीचे अंदर की तरफ दिया है। बोलो हाँ कि न – मैंने झट बोला जी पितापरमेश्वर। इसके बाद बाबा ने पूछा कि घर में माँ आलू प्याज बाहर खुले में टोरकी में रखती है – मैंने कहा जी बाबा, और घर का काश प्रॉपर्टि के पेपर, सब अंदर अलमारी में रखती है मैंने बोला तुरंत बोला- जी मालिक। प्याज वो बाहर खुले में इसीलिए रख देती है, क्योंकि व दो time परशाद फैयर केरने में होता है। और उसका चोरी होने का भी डर नहीं होता। बाकी घर और उसके परिवार से जुड़ी हुई जरूरी और कीमती छीजे वो सम्हालकर अंदर अलमारी में रखती है। इसी ही तरह मालिक ने दिमाग को ऊपर भाहर कि तरफ रखा है, क्योंकि वो हर समय हर जगह इस्तेमाल करने कि चीज़ नहीं है, बल्कि दिल जो निर्णय ले उस पर कार्य करने के लिए है। पर इंसान का मन ही उसकी असली दौलत है, और मन कि खूबसूरती ही इंसान के चरित्र में दिखाई देती है, इसीलिए उसको संभाल के अंदर कि तरफ रखा है। और आगे चेलेन तो जीवन के लिए खून आऊर उसकी purity दोनों ही कार्य आपका दिल करता है न कि दिमाग। राजा महल के अंदर बेट्टा है और मंत्री बाहर खडा होता है। संसर में भी अप एक दूसरे को बोलते है, दिल ____________

यही सुना होगा इसका दिमाग बहुत खराब है। आप कुश होते है उदास होते है, दोनों ही इस्तितियों में आप मन से होते है या दिमाग से होते है। मैंने प्रार्थना कि मालिक- दिल से ही खुश होटेन है, और दिल ही उदास होता है। दिल से planning करनी चाइए और उस planning को पूरा केसे करना है इसके लिए दिमाग इस्तेमाल करना चाहिए। पर इंसान इससे उल्टा करता है। हर चीज़ में दिमाग लगाएगा और फिल दिल से सोचेगा कि केसे करूँ। जबली मालिक ने दिमाग सोचने के लिए बनाया है, और "दिल तो दिल है"।

एक बात और बटाऊ मैंने कहा जी मालिक दया... तो बाबा बोले दिल का दोहरा पड़ने से ज्यादा लोग ठंडी सड़क होते है comparatively brain-hemorrhage से मरते है। जो

मशीन ज्यादा समय से नहीं इस्तेमाल होती है उसमे जंग लगती है। मेरे मन से निकला सच में मालिक क्या बात है। ये युग का प्रभाव है, इंसान हर समय अपनी खोपड़ी लगता रहता है, इसलिए गुरुबोलता है पहले अपनी खोपड़ी टेक फिर में शुरू होता हूँ। जीवन में placement सही होता कार्य सही होता है, जिसका जो स्थान हो उसको वही रखना चाहिए।

जगह और रोल बदलोगे तो गड़बड़ हो जाएगी... रखो मालिक में...

बाबा ने कहा...

Confidence

बाबा कि लहर चल रही थी और मालिक बोले कि जो हिलता है वो ठुकता है, स्थापित पुजता है! जो बाहर है वो कंकर है और जो अंदर है वो शंकर है! बाबा बोले कि प्यारे सड़क का पत्थर ठोकर खाता है और उसी पत्थर को जब फकीर किसी पेढ़ के नीचे रख कर जल चढ़ा दे तो उसकी पूजा शुरू हो जाती है! यह सारा खेल स्थापना का है! मैंने प्रार्थना कि, जी मालिक! बाबा ने बताया कि प्यारे यह स्थापना confidence से होती है और confidence ही स्थापना है। Confidence आपके experience से, experience आपके कर्मों से, कर्म आपकी involvement से और involvement आपके interest से होती है! Interest मन से होता है और मालिक कि दया हो तो सब हो जाता है, इंसान के बस कि बात नहीं है। Actually confidence आपकी आत्मा है और जितनी बलवान आपकी आत्मा होगी उतने ही आप confidence वाले होते हैं! Clear.... जी मालिक मैंने उत्तर दिया!

बाबा इस लिए आपकी आत्मा कि सेवा करते हैं ताकि उनके सब बच्चे बलवान हो जाएँ और इस जीवन यात्रा को confidently enjoy करें! मालिक तो करते ही हैं बस आपको उनके चरणों में ध्यान रखना है ताकि यह सब जो मालिक आपके लिए कर रहें हैं आप इसका आनंद ले सकें। गुरु तो सदा अपने सेवकों के लिए determined होते हैं तभी तो उनकी संतान confident होती है! इसी को गुरु का पट्ठा कहते हैं!

आप भी जीवन में बोलते हैं कि यह पढ़ने में होशियार है, बहुत confident है! यह बहुत confidently अपना काम करता है Confidence हो तो संसार में respect होती है! अध्यातम में इसी को स्थापना कहते हैं! जैसे एक बालक अपने माता पिता से पिट के सीखता है, एक डांट से सीखता है, एक कह देने से ही समझ जाता है और जो समझदार होता है वो इशारे से ही समझ जाता है, बोलो हाँ के ना... मैंने प्रार्थना कि जी... पिता परमेश्वर! यह समझ का भेद उसकी आत्मा की गहराई के अनुसार होता है! गुरु भी अपने बच्चों से यह उम्मीद रखता है की वो सिर्फ इशारे से समझ जाएँ और जो सेवक गुरु का इशारा पढ़ लेता है वो ही होता है गुरु का पट्ठा नहीं तो उल्लू का पट्ठा!

आप सब शिव की संतान हैं और शिव के बेअंत नामों में एक Mr. Confidence भी है तभी तो आत्मा जो उस परमात्मा का अंश है confident होती है! संसार में कहते है ना की अगर काम करो तो मन से करो और पूरा करो नहीं तो नहीं करो! अधूरे से ना करना भला! और काम पूरा confidence से ही होता है! इस लिए आप लोग भी अपने जीवन में जो भी करना confidence से करना!

मैं कह चुका, अब आप तय करें की आपको जीवन confidence से जीना है या complex में क्युंकी जैसा आप तय करेंगे कुदरत उसी रूप में आपके साथ रहेगी....

बाबा ने कहा.......

भाग्य

बाबा कहा करते थे " प्यारे मैं कर्म योगी हूँ। और कर्म करने में ही विशवास रखता हूँ, वैसे भी वो युग और था जब कुरुक्षेत्र था और अब कर्म क्षेत्र है। हर प्राप्ति के लिए कर्म करना पड़ता है। कुछ तो आप सब अपने प्रारब्ध के साथ लेकर आते हैं और बाकी इस जन्म के कर्मों की Balance sheet भी तैयार होती रहती है। जो भाग्य में लिखा है वो तो होगा ही क्योंकि होनी, होने के लिए बानी है। जो आपके भाग्य में लिखा है वो तो आपको मिलेगा ही तो फिर उसकी फ़िक्र क्या करनी, फ़िक्र से भला ज़िक्र! जो मन में हो गुरु को उसका ज़िक्र कर देना चाहिए। Tension से अच्छा Mention कर देना है क्योंकि Mention कर देने से राह मिल जाती है। आप के रोज़ के कर्मों के अनुसार आपका Present भाग्य change होता रहता है। गुरु सेवकों का भाग्य, गुरु चरणों में होता है। आपको एक बात बताऊँ ? जब इंसान भाग्य को follow करता है तो भाग्य आगे और इंसान पीछे-पीछे, पर जब आप गुरु को follow करते हैं तो आपका भाग्य आपको follow करता है। कैसी रही ! मैंने प्रार्थना की - क्या बात है मेरे दया के सागर! भाग्य अपनी जगह है, कर्म अपनी जगह है। भाग्य के अनुसार ही मिलेगा इस का अर्थ नहीं है कि आप भाग्य के भरोसे सब कुछ छोड़ के बैठ जाओ, कर्म ही न करो। भाग्य का लिखा आप अपने संग लेकर आए हैं, बाकी हर दिन भाग्य बदलता रहता है। भाग्य एक Bank Account की तरह है जिसमे Plus (+) भी होता है, Minus (-) भी होता है। इसीलिए यदि उसी के भरोसे बैठे सारा प्लस(+) ख़र्च दोगे तो balance Negative (-) में आ जायेगा। इस जीवन के सात कर्मों से आप अपनी FD खड़ी कर सकते हैं और FD पे interest तो मिलता ही है। सत्कर्मों की FD खड़ी कर लो और ख़र्चा उसके interest से चलाओ। रखो मालिक में आगे चलके सेवा में, FD आपको काम आएगी। इसी बीच बाबा ने क्या मस्त बात बताई - बोले गुरूजी का भाग्य देखो- उनके भाग्य में अपने राम ! और मेरा भाग्य देखो ? तुम सुसरे लफंडर ! इसके बाद तो कुछ देर तक मैं ख़ूब ठहाके लगाकर हँसा, और बाबा से कहा जी ये बात तो सही है। बाबा बोले - सुसरे को हँसी आ रही है मेरे भाग्य पर ! मैंने प्रार्थना की, मालिक आपके भाग्य से ही सबका भाग्य चलता है, जी दया करें। बाबा बोले चल-चल बुढे को बहला मत ! मैंने फिर प्रार्थना लगाई - मेरे मालिक दया कीजिए ! इस पर बाबा फिर बोले - चल-चल दोनों बाप बेटा बैठ के यहाँ पर गप्पें मार रहे हैं। आप भी कुछ कर्म करलो और मैं करूँ, नहीं तो मेरे बाप का तो कुछ नहीं जाएगा, जो जाएगा वो अप्पके बाप का जाएगा। मैंने फिर ज़ोर से हस्ते हुए बाबा चरणों में माथा तक डाला। आशीर्वाद लेकर मैं जब चला तो सोच-सोच कर मुस्कुरा रहा था कि _ _ _

बाबा ने कहा।

<u>गुरु चालीसा</u>

दया के साक्षात् स्वरुप मेरे बाबा - एक बार चालीसा का महत्व बता रहे थे, बाबा ने बताया कि - कि हर देवी-देवता का चालीसा होता है। जन्म के समय भी माँ और बच्चा चालीसा करते हैं। और फिर गुरु चरणों में आशीर्वाद के लिए स्थान पर आते हैं। पर इसके पीछे भाव क्या है ? बाबा ने तरफ देख कर पुछा - मैंने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की - पिता परमेश्वर आप ही दया करें। फिर बाबा ने बताया - कि जन्म के समय माँ और बच्चा जो चालीस दिन घर में ही और बहार नहीं निकलते हैं, वो इसलिए कि को अपने उस शरीर की चालीस दिन की सेवा और देख भाल लगाती है। और जो आत्मा शरीर में जन्म लेती है वो चालीस दिन तक प्रकृति से touch में रहती है ! ये भी मालिक की दया का स्वरुप है कि जिस आत्मा को वो पृथ्वी पर भेजते हैं, उसे फिर एक मौका देते हैं कि वो अपने प्रारब्ध को अच्छी तरह समझ ले।

इसीलिए पहले समय में चालीस दिन तक बच्चा अपनी माँ के साथ रहता था। जिस भी देवी-देवता से आप जो भी मनोकामना पूरी कराना चाहते हैं उस process के लिए चालीस दिन लगते हैं। इसलिए हर देवी-देवता का चालीसा रखा जाता है।

Actually ये सारा process सवा महीने का होता है पर दिनों के हिसाब से उसको चालीसा कहते हैं। जैसे शिष्य के लिए Natural Law है कि वो गुरु को पहला माथा टेक के सवा साल गुरु के साथ रहे। सवा साल गुरु चरणों में रह कर सेवा करे , जाने , समझे, सीखे। आज के युग में इतनी आसानी नहीं हो पाता, इसीलिए गुरूजी ने भी अपने बच्चों के लिए चालीसा रख दिया जब की गुरु का चालीसा "सवा साल" में ही होता है। पर हमारे गुरूजी ने सब पर दया की, कि युग बहुत fast भाग रहा है तो बच्चों का भी स्व साल का चालीसा मैं पूरा करादूँ। गुरु चालीसा में गुरु तो शिष्य की रगड़ाई, घिसाइ, पिटाई सब कुछ करता है। हर angel से शिष्य को बलवान करता है। भगाता भी है, दौड़ाता भी है। हर angle से उसकी ऐसी-तैसी फेर के उसको strong बना देता है। गुरूजी ने ये ही मानव बनाने की Factory लगाई है। गुडगाँव में लगाई है। गुरु - चरणों में चालीसा शिष्य के लिए एक जन्म लेने का process है ! जो जीवन आप संसार में जी कर आते हैं वह कुल- मिला कर personal और कचरा होता है। पर जब आप आकर गुरु चरणों में माथा टेक देते हैं, तो गुरु आपके इसी कचरे से आपको उठा कर शुरू हो जाता है और एक-एक करके आपके एक-एक विकार कर उसके स्थान पर मानव के गुण भर देता है। और ये सारा process गुरु इतना practically करता है कि शिष्य की आत्मा को झंझोड़ कर रख देता है। गुरु तो आपको ऐसे नहीं छोड़ेगा, संवारें गा ही पर आप भी यदि अपने मन से गुरु चरणों में स्वयं को अर्पित कर देते हैं तो गुरु आपको चालीसा में ही धन्य बना देता है। शिष्य को उठने-बैठने, खड़े होने, चलने की Basic education से शुरू करके जीवन के सदुपयोग तक के लिए तैयार कर देता है। इसीलिए कहते हैं " मंत्र मूलं, गुरु वाक्यं". चालीसा के दौरान जो-जो गुरु बोले, शिष्य

को झटसे "वैसे का वैसा" कर देना चाहिए। शिष्य होने के बाद तो पूरा जीवन ही इसी मंत्र के साथ जीना चाहिए। वैसे गुरूजी के लिए सारा खेल एक पल का है पर प्रकृति के Natural Law के अनुसार गुरूजी सवा महीने शिष्य के सारे के सारे 33 करोड़ जागृत कर देते हैं। और फिर उसके सर पे हाथ रख के " उसको "सेवा" में लगा देते हैं। तो मेरे प्यारों आप यदि अपने जीवन में से सिर्फ सवा महीना भी गुरूजी को मन से अर्पण कर दें तो गुरूजी आपको मानव बना कर ही छोड़ेंगे। तो हुई न deal आपके फायदे की। आप गुरु चरणों में सवा महीना अर्पण करते हैं तो गुरूजी in return आपको मानव बना कर आपके जीवन की बगिया में फूल खिला देते हैं।

(यहाँ पर मैं अपने जीवन का experience ज़रूर share करना चाहूंगा)

जब मेरे बाबा ने देखा कि बच्चे चालीस दिन भी नहीं निकाल पाते हैं, तो दया के सागर ने हम सब अलग-अलग समय पर आकर गुरुधाम में बिताए हुए दिनों को जोड़ कर चालीसा करा दिया करते थे और इसका फल भी आशीर्वाद रूप में करते थे। आप सबसे अनुरोध है, विनति है हमारे मालिक, दया के सागर की दया का ये रूप मन से समझ ली जिए गा। अभी भी समझ लो तो देर नहीं हुई, इसके बाद क्या लिखूँ।

बाबा ने कहा।

<u>समझ</u>

समझ समझ को समझा रही थी,

समझ ,समझ में जा रही थी...

समझ को समझ नहीं आ रही थी।

ये पंगतियाँ बोलेने के बाद बाबा, बोले कि समझने की बात बस इतनी सी है की कुछ समझना नहीं है। न सोच के पैदा होते हो न सोच के वापिस जाओगे। जो ना समझ है वही समझदार होते है। जीवन का सत्या जब येही है कि होता वो है जो मालिक चाहता है। और जो मालिक चाहता है वो बात समझनी किसीके बस कि नहीं है। मालिक जो करता है universally best करता है और आप लोग अभी better कि यात्रा कर रहे है। तो scientifically, historically and अनारकली any other कली....आप बेस्ट को कैसा समझ सकते है।

it is so simple, we have to perform ये संसार एक stage है। हम सब यहाँ अपना अपना रोल निभाने के लिए आए हैं। director जैसे इशारा करता है, कलाकार वेसा ही रोल करता है। उस रोल को करने में वो अपनी अक्कल नहीं लगता है। वैसे ही हमारे रोल भी मालिक(डाइरेक्टर) ने fix किए हुए हैं। बस हुमेन इतनी समझ करनी है, कि director के इशारे पर, आज्ञा पर हम अपना रोल करें। stage उसका, script उसकी, फिल्म उसकी। Flop हो या Hit (हिट) हो, हमे उसने चुना है। हर पात्र अपनी -अपनी पात्रता के अनुसार काम करे। इंसान करता ये है कि अपने काम में ध्यान नहीं लगता है, बल्कि गुरु के काम में तांक - झांक करने लगता है। ये उसकी सबसे बड़ी बेवकूफी होती है, और इसको वो अपनी समझदारी कहता है, और उसका "बखान" भी करता है। जब आदमी समझदार बनने की कोशिश करता है, या अक्कल लगता है, तो होता ये है की वो कहता कुछ और है, करता कुछ और है। होता कुछ और है, और दिखता कुछ और है। अपनी ही समझदारी से confuse हो कर बिहोंश हो जाता है। असल में वो एक बूंद है और एक बूंद को करना सिर्फ इतना सा है, कि सागर की ओर बहना है। पर वो बूंद खुद को सरग समझ कर वही पर अटक जाती है, और फिर मिट जाती है। वैसे भी इस पृथ्वी का final सच मिटना ही है। तो बस इतनी समझ करो की उस मालिक के प्रेम में मिट जाओ। इसके बाद कुछ भी करने की या किसी भी समझ की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है। मेरी नज़र में जो समझदार बन रहे थे, वो बेवकूफ नज़र आ रहे थे, जो ना-समझ थे असल में वो ही समझदार दिख रहे थे।

समझ के हेर-फेर ने खुदा से जुदा किया...
आप ही उलट पलट के, फिर से खुदा हुआ.....
बाबा ने कहा....

योग-साधना

बाबा ने starting के दिनों में ही 80’s में कहा था, कि प्यारे “योग” स्कूलों में एक subject कि तरह पढ़ाया जाना चाहिए। स्कूल के level से ही इसकी शिक्षा भी दी जानी चाहिए, इससे आने वाली generation भी healthy रहेगी।

मुझे भली-भांति याद है कि ये सुन कर मैंने मालिक को प्रार्थना की, कि जी ये किस प्रकार से हो?

बाब ने बताया कि इसका proposal बन के education minister के पास जाए तब ऐसा हो सकता है प्यारे। proposal बन भी जाए, proposal तैयार भी हो जाए तब भी education minster को ये sense हो और उसको ये अपने मन में आए तो हो सकता है, आप मालिक में रखो, मालिक जब चाहे करवा लेगा। देखते ही देखते योगा all over the world होने लगा।

दुनिया योगा कर भी रही है, लोग ठीक भी हो रहे हैं, योगा शिखाने वालों कि भी जीविका का अच्छा खासा प्रबन्द हो गया है। बाबा ने बताया प्यारे योग-साधना is the best, क्योंकि योग universal है, भोग personal है। योग करने से body के organ सही काम करते हैं, mentally आप relax रहते हैं और जब इंसान relax होता है तो अच्छा काम कर ही लेता है।

योग करने से मनभी control में रहता है। मैं जवानी में 18 घंटे योग साधना करता था। योग साधना आपको अध्यात्म में भी बोहोत मदत करती है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।

भोग से रोग, योग से निरोग।

योग भोग का खेल है सारा,
सतगुरु है जीवन का सहारा....

शिवजी को तीसरी आँख है, वो परम यौग कि आँख है। क्योंकि शिवजी परम योगी हैं...

शरीर के लिए योग करना चाहिए, मन के लिए मंत्र करने चाहिए, और आत्मा के लिए सेवा करनी चाहिए।

तो ये तो जीने का हो गया, Body, Mind & Soul का !!

शुरुआत तो प्यारे शरीर से ही होगी, इसलिए शरीर को योग से साधो। बाकी भी साध जाएगा॥

बाबा ने कहा....

दर्पण

बाबा के मुख से कई बार दर्पण, आईन, शीशा के बारे में सुना। एक बार बाबा ने कहा- कि मालिक कि रचना सर्वश्रेष्ट है ओर इस रचना को देखना हो तो शीशे के आगे खड़े हो जाने। एक दिन बाबा कुछ और ही mood में थे और गप्पों के बीच में बोले, इस पृथ्वी के सबसे बड़े बेवकूफ से मिलना होतो दर्पण के सामने जाके मिल लो। एक दिन मालिक के चरणों में बेठा था और सेवा की बात चल रही थी, बाबा कुछ पूछ रहे थे और मैं उसका उत्तर दे रहा था। बाबा बता रहे थे कि, प्प्यारे किसी को गली भी देता हूँ तो, वो खुश हो जाता है और अगली बार आकार बोलता है – गुरुजी आपकी गली ने ठीक कर दिया।

अपने अंदाज़ में पिता-परमेश्वर मुसकुराते हुए बोले कि – "सुसकों ने सोच रखा है, हम तो नहीं सुधरेंगे भले गुरुजी गली देना सीख जाएँ"।

इस बात पर बाबा और में दोने हस रहे थे, इसके बाद बाबा बोले – "कि तो एक काम करना, सुभा शीशे के आगे खड़े होके खुद को गली देना और अच्छी लगे तो तेरे को license देता हूँ किसी को भी दे देना"।

मैंने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, कि मालिक दया कीजिये।

एक बार फिर बातों में आईने का ज़िक्र आया तो बाबा बोले कि प्यारे दर्पण हमेशा सच बोलता है जो आप हो वही-का-वही दिखाता है। आप अपने हाव-भाव आईने से नहीं छुपा सकते। वैसे भी बोलते है ना कि, चहरा मन का दर्पण होता है... और अपना चेहरा देखने के लिए आपको दर्पण लगता है। आपके मान में कुछ और चल रहा हो और आप अपने चेहरे पर कुछ और भाव रखो, पर शीशे में आपको अपना double character दिख ही जाता है। आप आईने से अपनी बनावट छुपा नहीं सकते। अपने जीवन में आप दर्पण का भी सदुपयोग कर सकतेन हैं। जैसा चेहरा आपको देखना पसंद हो, उसी तरह के विचार मन में रखो। शीशे कि मदद से अपनी शक्ल देख कर भी आप खुद को correct कर सकतें है। मालिक ने तो हर छोटी-से-छोटी चीज़ भी इस श्रेष्ठ के सदुपयोग के लिए बनाई है।

खुद ही शीशे में खुद को देख कर नंबर दे देना, कि पास हुए या फ़ेल।

पास हुए तो बधाई के पात्र है और फेल हुए, तो भी समय रहते सुधार जाना।

आँख खुले सवेरा...

बाबा ने कहा...

चरणामृत

बाबा कहा करते थे, गुरु गुण होता है। गुरु का आचरण स्थापना होती है , गुरु का शरीर कल्याण कारी होता है, गुरु चरणों में सृष्टि होती है। जब कुछ नहीं था तब भी जल था, जब प्रलय होगी तब भी जल ही जल होगा और जल ही जीवन है। स्थान पर संगत को जो जल मिलता है वो गुरूजी के चरणों के ध्यान से बना हुआ मिलता है। गुरु चरणों के ध्यान से बना हुआ जल अमृत होता है और उसे चरणामृत कहते हैं। ये शब्द चरणामृत ही सब कुछ clear कर देता है। गुरु का शिष्य इसी चरणामृत के सदुपयोग से विकार मुक्त हो जाता है और गुरु की ही दया से सेवा में संगत को अमृत बांटता है। शिष्य के अंदर का शिव तत्व और उसका अपनी आत्मा से मिलन, ये भी गुरु चरणामृत से हो जाता है। पर हाँ इसके लिए शिष्य को सदा गुरु आज्ञा में रहना चाहिए और निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए। जीवन में जो भी पाएंगे वो अपने कर्मों का ही पाएंगे। आप कसरत करते हैं और उसके साथ ख़ुराक भी अच्छी लेते हैं तभी शरीर बलवान होता है सिर्फ़ किसी एक से बलवान नहीं होगा।

ऐसे ही आप सोचें कि जल पी लिया क्योंकि ये तो चरणामृत है तो सब हो जाएगा, तो ध्यान रखना इस चरणामृत को हजम करने के लिए सेवा भी करनी पड़ेगी। दूसरी बात यह भी कि intention main होती है।

तो यदि आप personal की intention से चरणामृत का सदुपयोग करते हैं तो एक level तक तो उसका प्रभाव आएगा ही पर universal रूप से आपको अपने भले के लिए मार्ग पर चलना ही पड़ेगा। अब ये तय करना आपकी जवाबदारी है कि चरणामृत का इस्तेमाल आप किस भावना से करना चाहते हैं। Universal या Personal उसकी संतान बनकर उन्हीं के प्यारों को अमृत बाँटना चाहते हैं। या खुद की सोच से सारा अमृत खुद के लिए इस्तिमाल करना चाहते हैं।

जाकी भावना जैसी, ताकी देखी मूरत वैसी।

बाबा ने कहा।

मोन

बाबा ने बताया था, कि प्रकृति कि भाषा मोन है। शब्द पृथ्वी के लिए हैं, और स्शब्द भ्रम हैं! एक शब्द को बोलने के लिए energy तो खर्च होती ही है, और जीवन भर इस energy को फालतू कि बकवास में खर्च कर देते है। वास्तव में ये energy आपकी दौलत है और जिस काम को कर्ण के लिए ये दौलत मिली है, अगर उस काम में न लगा कर उहिन खर्च दी जाएगी, तो जब कुदरत सैट-कर्म का मोका देगी, तो खाली हाथ ठन-ठन गोपाल खड़े हो जाओग। मालिक कि दी हुई energy का मूल्य समझो और उसी के अनुसार सदुपयग में लगाओ, waste मत करो, आपकी दो रोटी कि भूख होती है, तो दो ही खाते हो न, पर जरूरत हो या ना हो सारा दिन बोलते रहते हो। इसी लिए प्रक्रित मोन रह कर आपको ये पढ़ती भी है और सिखाती भी है, कि ये energy बेशकीमती है, समझदार के लिए तो इशारा ही काफी होता है, बोलने कि ज़रूरत ही नहीं पड़ती। ये बताने के बाद बाबा ने अपने हाथ को photo पे छुआ, और बोले - ब्रम्हा, नाक पर छु कर बोले- विष्णु और finally आँखों को छु कर बोले- महेश।

बाबा का message था, कि शिव आँख से बोलता है, बाबा ने बोला शिव कि सुनने के लिए आँख कि भाषा आनी चाहिए। फिर बाबा बोले कि आप सब प्रकृति से हैं और बाबा कि संतान हैं, दोनों में ही भाषा मोन ही है और मोन कि भाषा सुनने और समझने के लिए मोन रहना पड़ता है। so simple घर से बाहर निकालने के लिए आपको घर छोड़ना पड़ता है, ऐसे ही प्रकृति कि सुनने के लिए आपको अपनी भाषा छोड़नी पड़ेगी, नहीं तो नहीं सुन पाएंगे। बाबा और आगे बता रहे थे कि आपके अंदर जो आत्माराम बेठा है, वो भी बिना बोले आपको अंदर से ही बता देता है सुसरा, ये इंसान नाम का जानवर ही, फालतू कि बकवास में जीवन लगा देता है।

हर तरफ प्रकृति के मोन का ही संगीत गूंज रहा है। मोन रह और सुन फिर बाबा एकदम से बोले - आप समझ गए, मैंने प्रार्थना कि जी मालिक दया, तो बाबा बोले, तो फिर मैं क्यों बोल रहा हूँ।

बाबा ने कहा....

<u>राहत</u>

बाबा सदा बोलते थे, you belong to the healer, इसीलिए healing देनी चाहिए और बाबा का मंत्र भी यही था।

Healing to feeling

एक बार बाबा बता रहे थे, कि गुरु गुण होता है and not only गुण गुणों कि खान, गुरु is the essence of all the sense.

सब गुरु के होते हुए भी और गुरु के ही हैं इसके बावजूद relax नहीं होते, किसी भी इंसान के पास राहत नहीं होती है क्योंकि वो सुविधाओं में जीता है और आसक्ति रखता है, और दुखी रहता है। आसक्ति शब्द खुद ही कह रहा है, कि मैं कभी भी आ-सकती हूँ.. जब तक आसक्ति रखोगे, राहत नहीं मिलती है। राहत कि चाहत होनी चाहिए ना कि, राहत कि आसक्ति रखनी चाहिए। जैसे शिष्य को गुरु मिलने के बाद एक ही चाहत रह जाती है, वो है राहत बाँटना क्योंकि शिष्य बनते ही गुरुजी तो उसको त्रिप्त कर ही देते हैं, उसकी चाहत को राहत दे ही देते हैं। तो आब जो बाकी का जीवन बचा उसका क्या?

तो गुरु का शिष्य अपने जीवन में राहत पाने के बाद राहत बाँटने बाला बाँ जाता है। वैसे भी शिष्य अगर मन से गुरु को अर्पण कर देता है तो गुरु से वो जो भी पता है बाँटने के लिए ही होता है, क्योंकि उसकी त्रिपति- युक्ति तो सब गुरु दर्शनों के साथ हो ही जाती है...

कुछ तैराक तैरते-तैरते डूब गए,
कुछ तैराक तैरते-तैरते तर गए....

मिला है तो बाँटने पड़ेगा, और बँटोगे तो और मिलेगा... गुरुजी के दर्शनों का उनकी दी हुई राहत का thank you तब पूरा होता है। जो शिष्य अपने सेवादार को माथा टेकने के लिए भेजता है...

मूल से प्यारा सूद....

वाह, क्या बाबा ने कहा....

लेन-देन की भाजी

बाबा अपनी गप्पों में अक्सर यह पंक्ति कहा करते थे, कि यह संसार लेन-देन कि भाजी है!

एक दिन गुरुघर में हम दोनों बाप और उनके चरणों में, मैं, बेटा बैठे हुए थे! बाबा मुझे बोले प्यारे, यह संसार लेन-देन की भाजी है! समझे प्यारे, लेन-देन की भाजी? मैंने तुरंत हाथ जोड़कर प्रार्थना की- जी मालिक!

बाबा बता रहे थे कि इस संसार में कुछ भी लेते हो तो उसके बदले में कुछ न कुछ देना ही पड़ता है! अगर कुछ देते हो तो उसके बदले में कुछ लेना ही पड़ता है! अगर एक बुशर्ट भी लेते हो तो उसकी कीमत देते हो! यदि कीमत दे देते हो तो बुशर्ट लेते हो!

जीवन मिला है तो साँसो का सदुपयोग कुदरत को लोटाना ही पड़ता है! जब सदुपयोग करते हो तो प्राप्ति भी होती है! फिर प्राप्ति की कीमत utility से देते हो! आप देखो तो कुल मिलाकर यह प्राप्ति और utility का खेल है! सब कुछ आपस में interrelated ही है! एक सांस लेते हो तो एक छोड़ते हो, और छोड़ते हो तो फिर लेते हो and so on, क्यूंकी रचना ही जोड़े से हुई है! यहाँ सब कुछ जोड़े में चलता है!

मेरे मन में आया और मैंने मालिक के चरणों में प्रार्थना रखी कि "दया के सागर" यह लेन-देन की भाजी कब तक? बाबा ने अपने उसी अनूठे अंदाज़ में एक look दी और बोले, जब तक आप हैं, जब तक दो हैं! जब "मैं" "मय" हो जाती है तब एक हो जाता है! वैसे भी हर situation में एक कहता है, एक सुनता है पर तीसरा देख रहा होता है! (बाबा ने इतने सरल, सहज भाव से यह मंत्र दिया और उनकी दया से मन में उतर भी गया)! बाबा बोले- आपने प्रश्न बहुत अच्छा पूछा, मांगो जो मांगना हो... मैंने हाथ जोड़े और प्रार्थना करी की जो आपकी मौज हो दे दीजिये! मैं माँगूँगा तो आप हिसाब लेंगे और आपका हिसाब देना मेरे बस की बात नहीं है! अभी संसार के हिसाब ही नहीं खत्म हो रहे! बाबा आप हिसाब लेंगे ना? बाबा बोले- प्यारे हिसाब तो देना ही पड़ेगा क्यूंकि लेन-देन की भाजी है! फिर खूब जोर से हंस दिये और बोले प्यारे आप बुड्ढे को खुश कर देते हो! जी दया मेरे मालिक, मैंने कहा!

(यहाँ पर एक बात बताना चाहूँगा कि मेरे जीवन में, गुरु चरणों में रहते हुए जो भी भाव मन में आता था, दया के सागर उसकी matchy-matchy कर दिया करते थे!)

मालिक के वचन सुन कर जैसे ही मेरे मन में भाव आए वैसे ही बाबा ने बात को पूरा करते हुए बोला कि दोनों के एक हो जाने की यात्रा है! आगे तो, सजदा और सजना आपको मालूम है! मैंने प्रार्थना की-दया कीजिये मालिक! इसके आगे फिर बाबा ने मजे लिए- आप मुझे सिर्फ यह बता दो कि आप इतने समझदार कैसे हुए.....

बाबा ने कहा......

मासूमियत

यह शुरू कि बात है जब बाबा अंधेरी में सेवा किया करते थे! एक रात मालिक के चरणों में बैठा उनकी दया वर्षा का आनंद ले रहा था! एक भाव तभी पैदा हुआ कि मालिक आप 24x7x365 लगे रहते हैं ! बस सेवा मैं ही इनको रस आता है ! सेवक होने के नाते , जब भाव आया, जो मालिक ही उत्पन करता है तो मैंने प्रार्थना लगाई कि सर्वेसर्वा आप सब पर दया करते हैं, दयालु अपने शरीर पर भी कीजिये!

बाबा तुरंत बोले अरे प्यारे मैं सुबह walk के लिए जा रहा था तो सामने से मेरा शरीर आ रहा था और मुझे बोला कि गुरुजी आप सब पर दया करते हैं, सिर्फ मुझ पर नहीं करते! मैंने कहा जी मालिक दया कीजिये!

बाबा बोले अरे प्यारे क्या हुआ कि जब गुरुजी के दर्शन हुए तो तभी से भंगेड़ी हो गया ! उसने ऐसी भंग पिला दी ! अब धुनकी सी लगी रहती है और मालिक लहर में जो करवा ले- भाना मिठा ! क्या है प्यारे काम बहुत है और समय कम है इसलिए लगा रेहता हूँ ! आप बच्चों के लिए सब तैयार करना है ताकि आप जब सेवा करें तो पीछे मुड़कर देखना ना पड़े ! यह वचन सुनकर स्वाभाविक है कि मेरे रोम-रोम में सिहरन हो उठी !

बाबा बोले क्या है कि यह शरीर उस मालिक की मशीन है औए इसको जितना चलायो उतना अच्छा है क्यूंकि बुढ़ापे में तो यह इतना नहीं चलेगी ! इसलिए मैं इसकी ऐसी-तैसी फेर रहा हूँ, पर एक बात है कि यह आगे चलकर हिसाब तो लेगा ही ! बोलेगा आप सब का करते हो, सबको देते हो, मेरा भी मुझे दो !

यह सुनते ही मैंने फिर मालिक के चरणों में प्रार्थना की- मालिक आप दया के सागर हैं ! इस पर भी दया कर दीजिये ! अपने अंदाज़ और लहर में मेरे बाबा बोले - प्यारे matter बहुत serious है पर आप sincere रहना ! आप serious मत हो जाना ! मैं मालिक के चरण पकड़ कर प्रार्थना में लगा हुआ था !

बाबा बोले क्या है कि प्यारे गुरुजी को देखकर दीवानगी हो गई और उसकी लहर में कुछ और सुझाई नहीं देता है, सिर्फ कर्म दिखते हैं और अपने राम कर्मयोगी हैं ! आपको एक बात और बताऊँ सेवा आत्मा का भोजन है ! जब आप सेवा में लगे होते हैं तो सेवा करने से ही आपकी भूख-प्यास, थकान सब मिट जाती है क्यूंकि सेवक मालिक की आज्ञा में चलकर मस्त रहता है ! ऐसी बात नहीं है आपकी माताजी मेरा बहुत अच्छा ध्यान रखती हैं ! पर हाँ activity चलती रहनी चाहिए ! activity हो तो मैं relax रहता हूँ और थोड़ा सा खाकर भी चलता है ! पहले भी जीवन में जब योग-साधना करता था तब भी जितना आवशयक है उतना ही खाता था!

भोजन जीवन के लिए है, जीवन खाने के लिए ही नहीं मिला ! सेवा से आत्मा का पेट भर जाता है और कर्म करने से शरीर भी स्वस्थ रहता है ! आप एक सेवक की नज़र से देख रहें

हैं, आप सही हो पर गलत मैं भी नहीं हूँ, मैं गुरु का बेटा हूँ ! उनकी चरणधूलि हूँ ! आप समझ गए... मैं माथा टेक कर जी...कह रहा था....

बाबा ने कहा.....